"हीरक जयंती राजभाषा विशेषांक"

राजभाषा विश्वामित्री

द्वितीय अंक-2024-25

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
(श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार)
उप क्षेत्रीय कार्यालय
पंचदीप भवन, उर्मी सोसाइटी, अलकापुरी, वड़ोदरा (गुजरात) - 390007

वडोदरा बाढ़ः चुनौती और संघर्ष

अगस्त 2024 के अंतिम सप्ताह में आई भीषण बाढ़ ने वड़ोदरा शहर को बुरी तरह प्रभावित किया। इस संकट के समय में, हमारे कर्मचारी राज्य बीमा निगम (क.रा.बी.नि.) के उप-क्षेत्रीय कार्यालय वड़ोदरा को भी गंभीर चुनौतियों का सामना करना पड़ा। 27 और 28 अगस्त को भारी बारिश के कारण कार्यालय में जलभराव हो गया था।

हालांकि, इस कठिन समय में हमारी उप-क्षेत्रीय कार्यालय के कर्मचारियों ने अद्वितीय समर्पण और तत्परता का परिचय दिया। अपराहन 27 अगस्त को सुरक्षा गार्ड श्री कल्याण सिंह और श्री सोमोता राम मीना - अवर श्रेणी लिपिक की त्वरित कार्रवाई से महत्वपूर्ण दस्तावेजों और उपकरणों को सुरक्षित स्थान पर पहुंचाया गया। उनके इस साहसिक योगदान की प्रशंसा करना नितांत आवश्यक है।

बाढ़ का पानी कम होते ही प्रातः 29 अगस्त को कार्यालय के संचालन को पुनः शुरू करने के प्रयास तेज कर दिए गए। सफाई और सैनिटाइजेशन कार्य तेजी से किया गया, ताकि कार्यालय जल्द से जल्द सामान्य स्थिति में आ सके। इस कठिन समय में भी हमने अपने पेंशनधारकों, बीमाधारकों और आश्रितों बीमाधारकों को सेवाएँ प्रदान करने में कोई विलंब नहीं होने दिया। उप-क्षेत्रीय कार्यालय वडोदरा के वित्त एवं लेखा शाखा और हितलाभ शाखा के कर्मचारियों द्वारा जरुरी दस्तावेजो एवं आकड़ो को मकरपुरा और गोरवा शाखा कार्यालयों में ले जाया गया, जिससे पेंशनधारकों, बीमाधारकों, और आश्रितों के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को निभाया जा सके। इस क्रम में हितलाभ में श्री कुमार कुंजन (सहायक निदेशक) के नेतृत्व में श्री रामराज मीना, श्री अंकेश अंकित, श्री अमितकुमार और वित्त एवं लेखा शाखा से सुश्री तरनप्रीत कौर (कार्यालय अधीक्षक) के नेतृत्व में श्री नरोतम मीना, श्री चंद्रप्रकाश मीना, श्री सरजीत, श्रीमती गीता बजाज ने समय पर पेंशन और मासिक नकद लाभ का निपटारा किया और 31 अगस्त तक सभी पेंशनधारकों, बीमाधारकों, और आश्रितों को उनका भुगतान सफलतापूर्वक कर दिया गया।

राजस्थान पत्रिका दिनांकः 01.09.2024

बाढ़ संकट के बीच ईएसआईसी एसआरओ वडोदरा भी मदद को आया आगे

वडोदरा. शहर में बाढ़ के चलते जनजीवन के प्रभावित होने के कारण कर्मचारी राज्य बीमा निगम (ईएसआईसी) के वडोदरा उपक्षेत्रीय कार्यालय (एसआरओ) के कर्मचारी और अधिकारी भी वडोदरा के लोगों की मदद को आगे आए हैं। वडोदरा में 3,316 लाभार्थियों को उनका मासिक लाभ बिना किसी देरी के प्रदान किया जाएगा। शनिवार 31 अगस्त 2024 को 95 लाख की राशि जारी की गई है।

"X" (पहले Twitter) पर
क.रा.बी.नि मुख्यालय द्वारा ट्वीट

उप-क्षेत्रीय कार्यालय वडोदरा के कर्मचारियों के समर्पण और अदम्य साहस ने इस विपरीत समय में अपने पेंशनधारकों, बीमाधारकों , और आश्रितों को समय पर सहायता प्रदान कर एक अद्वितीय उपलब्धि का उदाहरण प्रस्तुत किया है । यह इस बात को साबित करता है कि चुनौतियों के बावजूद, कर्मचारी राज्य बीमा निगम के कर्मचारी अपनी जिम्मेदारियों को निभाने में कभी पीछे नहीं हटते।

राजभाषा प्रतिज्ञा

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 और 351 तथा राजभाषा संकल्प 1968 के आलोक में हम, केंद्र सरकार के कार्मिक यह प्रतिज्ञा करते हैं कि अपने उदाहरणमय नेतृत्व और निरंतर निगरानी से; अपनी प्रतिबद्धता और प्रयासों से प्रशिक्षण और प्राइज़ से अपने साथियों में राजभाषा प्रेम की ज्योति जलाये रखेंगे, उन्हें प्रेरित और प्रोत्साहित करेंगे; अपने अधीनस्थ के हितों का ध्यान रखते हुए; अपने प्रबंधन को और अधिक कुशल और प्रभावशाली बनाते हुए राजभाषा – हिन्दी का प्रयोग, प्रचार और प्रसार बढ़ाएंगे। हम राजभाषा के संवर्धन के प्रति सदैव ऊर्जावान और निरंतर प्रयासरत रहेंगे।

जय राजभाषा ! जय हिन्द !

"हीरक जयंती राजभाषा विशेषांक"

राजभाषा विश्वामित्री द्वितीय अंक (2024-2025)

संरक्षक
श्री विमल रावत
उप निदेशक (प्रभारी)

संपादक
श्री महादेव मीना
उप निदेशक (प्रभारी राजभाषा)

संपादन एवं टंकण सहयोग
श्री रंजीत कुमार
सहायक

ई-वर्ज़न के लिए स्कैन करें।

संपादन समिति
श्री बिनोद कुमार
सामाजिक सुरक्षा अधिकारी
श्री रिंकु कुमार मीणा
प्रवर श्रेणी लिपिक
श्री पंखी लाल मीना
प्रवर श्रेणी लिपिक

प्रकाशक
कर्मचारी राज्य बीमा निगम
उप क्षेत्रीय कार्यालय, वड़ोदरा
पंचदीप भवन, उर्मी सोसायटी, अलकापुरी
वड़ोदरा (गुजरात) - 390007
दूरभाषः 0265-2961442 ई-मेलः dir-vadodara@esic.gov.in

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं की मौलिकता, उनमें व्यक्त विचार एवं तथ्यों का उत्तरदायित्व संबंधित रचनाकारों का हैं। इनमें संपादकीय या विभागीय सहमति आवश्यक नहीं है।

अनुक्रमणिका

क्रम संख्या	शीर्षक	रचनाकार	पृष्ठ संख्या
1	संदेश–माननीय महानिदेशक, कर्मचारी राज्य बीमा निगम	महानिदेशक	4
2	संदेश–माननीय वित्त आयुक्त कर्मचारी राज्य बीमा निगम	वित्त आयुक्त	5
3	संदेश–माननीय बीमा आयुक्त (राजभाषा)	बीमा आयुक्त (राजभाषा)	6
4	संदेश–माननीय बीमा आयुक्त (पश्चिम क्षेत्र)	बीमा आयुक्त (पश्चिम क्षेत्र)	7
5	संदेश–माननीय क्षेत्रीय निदेशक (प्रभारी)	क्षेत्रीय निदेशक (प्रभारी)	8
6	संरक्षक की कलम से	उप निदेशक (प्रभारी)	9
7	संपादक की कलम से	उप निदेशक (राजभाषा प्रभारी)	10
8	फरिश्तों से मुलाकात: याय मठ की चोमो	विमल रावत	11–13
9	सामाजिक सुरक्षा: गिग वर्कर: गिग अर्थव्यवस्था	महादेव मीना	14
10	चित्रकला (पेंटिंग)	तनिष कुमार मीना, भतीजा श्री महादेव मीना	15
11	चित्रकला (पेंटिंग)	रोनित राज पुत्र श्री कुमार कुंजन	16
12	वक्त, अनमोल नफरत, परिवर्तन	दिलीप कुमार झा	17
13	उद्धव गीता	प्रभात कुमार बारीक	18–19
14	चित्रकला (पेंटिंग)	बी इप्सिता, पुत्री प्रभात कुमार बारीक	20
15	मेरा भारत महान	सीता कुमारी पत्नी श्री बिनय कुमार जायसवाल	21
16	यूनिकोड आसान है,इसे अपनाएं	डॉ. दिनेश सिंह	22–23
17	कलयुग, घोर कलयुग	ख़ुशी मीना पुत्री श्री टीका राम मीना	24
18	भारत का नया संसद भवन	परेश बलदानिया	25–26
19	जीवन एक क्रिकेट है	रिंकु कुमार मीणा	27
20	निगम गीत	पंखी लाल मीना	28
21	भारतीय सेना के बारे में आश्चर्यजनक तथ्य	सुनील कुमार	29
22	नशा से मुक्ति (विकसित भारत की तरफ एक कदम)	रंजीत कुमार	30
23	बेटे भी घर छोड़ जाते हैं	नरोत्तम कुमार मीना	31
24	द हीलिंग पॉवर ऑफ़ म्यूजिक एंड बुक्स	नंदिनी के. राठोड	32
25	माँ	रोहन कुमार मीना पुत्र श्री महादेव मीना	33
26	ई.एम.आई एक महाजाल	अजीत कुमार सिंह	33
27	ना तेरा हैं, ना मेरा हैं, ये दुनिया तो एक रेन बसेरा हैं	जगदीश कुमार मीना	34
28	कड़वा सत्य	हनुमान प्रसाद	34
29	कार्यालय गतिविधियों की झलकियां		35–37
30	पुराने दिन	रवीना चौधरी	38
31	चलो आगे बढ़े,नई ऊंचाइयों को	गीता बजाज	38
32	आराम: अगला सबसे अच्छा विकल्प क्यों है	शिवम गोयल	39
33	सरकारी कर्मचारी	चौथाराम चौधरी	40
34	पुराने दिन	विकाश शुक्ला	40
35	घर का बड़ा बेटा	जितेंद्र मीना	41
36	प्रकृति के साथ जिये, ग्लोबल वार्मिंग के साथ नहीं	मनीष मीना	41
37	जय जय किसान	पंकज मीना	42
38	माँ की ममता	सोमोता राम मीना	42
39	तीन दोस्तों की मज़ेदार स्टोरी	परिमल घोषाल	43
40	किसी ने पूछा, क्या है नारी..?	रौशन कुमार	43
41	गुर्दा (किडनी) रोग, कारण तथा बचाव	हरीश चन्द्रा	44
42	घर की मर्यादा – बेटी	ममता चौधरी पुत्री मीना कुमारी	45
43	नशा एवम गति	राकेश कुमार सैनी	46
44	हिंदी पखवाड़ा–2024 प्रतियोगिताओं के विजेता		47–48
45	प्रशंसा पत्र	डॉ. दिनेश सिंह (भाषा प्रशिक्षण केंद्र, वड़ोदरा)	49
46	प्रशंसा पत्र	उप निदेशक प्रभारी, उप क्षेत्रीय कार्यालय, सूरत	50

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
(श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार)
Employees' State Insurance Corporation
(Ministry of Labour & Employment, Govt. of India)
क.रा.बी.नि.
ESIC

पंचदीप भवन, सी.आई.जी. मार्ग, नई दिल्ली-110002
Panchdeep Bhavan, C.I.G. Marg, New Delhi-110 002
Tel.: 011-23604740
Website: www.esic.gov.in

डॉ. राजेन्द्र कुमार (भा.प्र.से.)
महानिदेशक

संख्या: ए-49/17/1/2016-रा.भा.
दिनांक : 08.05.2024

संदेश

अत्यंत हर्ष का विषय है कि उप क्षेत्रीय कार्यालय, वड़ोदरा की विभागीय हिंदी पत्रिका '**राजभाषा विश्वामित्री**' के द्वितीय अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। किसी क्षेत्र की पत्रिका उस क्षेत्र के कार्यालय की गतिविधियों का दर्पण होती है जिसके माध्यम से कार्मिकों का रचनात्मक और भाषाई विकास होता है। मैं संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई देता हूँ एवं पत्रिका के सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ।

शुभकामनाओं सहित,

राजेन्द्र कुमार
(डॉ. राजेंद्र कुमार)

श्री विमल रावत
उप निदेशक (प्रभारी),
उप क्षेत्रीय कार्यालय, वड़ोदरा,
क.रा.बी. निगम, वड़ोदरा - 390007

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
(श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार)
Employees' State Insurance Corporation
(Ministry of Labour & Employment, Govt. of India)

पंचदीप भवन, सी.आई.जी. मार्ग, नई दिल्ली-110002
Panchdeep Bhavan, C.I.G. Marg, New Delhi-110 002
Tel.: 011-23604740
Website: www.esic.gov.in

टी. एल. यादेन
वित्त आयुक्त

सं. ए-49/17/2/2016-रा.भा.
दिनांक : 23.05.2024

संदेश

उप क्षेत्रीय कार्यालय वड़ोदरा की विभागीय हिन्दी गृह पत्रिका '**राजभाषा विश्वामित्री**' के द्वितीय अंक के प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएं। पत्रिका का यह अंक सभी के लिए उपयोगी सिद्ध हो एवं राजभाषा कार्यान्वयन में सहायक बने, यही मेरी कामना है।

शुभकामनाओं सहित,

(टी. एल. यादेन)

श्री विमल रावत
उप निदेशक (प्रभारी),
उप क्षेत्रीय कार्यालय, वड़ोदरा,
क.रा.बी. निगम, वड़ोदरा - 390007

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
(श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार)
Employees' State Insurance Corporation
(Ministry of Labour & Employment, Govt. of India)
क.रा.बी.नि.
ESIC

पंचदीप भवन, सी.आई.जी. मार्ग, नई दिल्ली-110002
Panchdeep Bhavan, C.I.G. Marg, New Delhi-110 002
Tel.: 011-23604740
Website: www.esic.gov.in

रत्नेश कुमार गौतम
बीमा आयुक्त

संख्याः ए/49/17/3/2016-रा.भा.
दिनांकः 03.05.2024

संदेश

यह हर्ष की बात है कि उप क्षेत्रीय कार्यालय वड़ोदरा हिंदी गृहपत्रिका '**राजभाषा विश्वामित्री**' के द्वितीय अंक के प्रकाशन की ओर अग्रसर है। आशा है यह अंक भी सूचनाप्रद और मनोरंजक सामग्री से भरपूर होगा जिसमें वडोदरा कार्यालय के कार्मिकों की पूर्ण भागीदारी होगी। आजादी के पहले से ही वड़ोदरा विभिन्न गतिविधियों का केंद्र रहा है। यहाँ की भाषा तथा जन-जीवन समृद्ध और गरिमापूर्ण हैं।

आशा करता हूँ कि इस पत्रिका में भी पूरी लग्न और मेहनत से कार्य किया जाएगा और इसका दूसरा अंक भी सभी के लिए उपयोगी होगा। पत्रिका के सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ।

शुभकामनाओं सहित,

(रत्नेश कुमार गौतम)

श्री विमल रावत
उप निदेशक (प्रभारी),
उप क्षेत्रीय कार्यालय, वड़ोदरा,
क.रा.बी. निगम, वड़ोदरा - 390007

बीमा आयुक्त कार्यालय (पश्चिम क्षेत्र)
कर्मचारी राज्य बीमा निगम
(गुजरात, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश व गोवा)
(श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार)
चौथी मंजिल, पंचदीप भवन, आश्रम रोड,
अहमदाबाद-380014 (गुजरात)

क.रा.बी.नि.
ESIC

Office of the Insurance Commissioner (West Zone)
Employee's State Insurance Corporation
(Gujarat, Rajasthan, Maharashtra, MP & Goa)
(Minisrty of Labour & Employment, Govt. of India)
4th Floor, Panchdeep Bhavan, Ashram Road,
Ahmedabad-380014 (Gujarat)
E-mail:ic-westzone@esic.gov.in
Phone-079-27540233

रामजी लाल मीना
बीमा आयुक्त (पश्चिम अंचल)

अ.शा.पत्र सं. राजभाषा/आंचलिक कार्यालय/पश्चिम क्षेत्र/1/2024
दिनांक : 15.05.2024

संदेश

प्रिय श्री रावत,

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि उप क्षेत्रीय कार्यालय, वड़ोदरा द्वारा हिंदी गृह पत्रिका ''**राजभाषा विश्वामित्री**'' के द्वितीय अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। यह राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु पत्रिका के उद्देश्य के सफल होने की दिशा में एक संगठित प्रयास है। पत्रिका के माध्यम से साहित्य प्रेमी कार्मिकों को अपने भावों एवं विचारों को अभिव्यक्त करने का एक मंच मिलता है जिससे भाषायी कौशल में भी वृद्धि होती है।

भाषा किसी भी राष्ट्र की आत्मा होती है। किसी भी देश की संस्कृति उसकी भाषा के आईने से ही पहचानी जा सकती है। भाषा के माध्यम से सांस्कृतिक मूल्यों और परम्पराओं का उत्थान संभव है। इसी प्रकार किसी प्रतिभा को मुखर होने के लिए भाषा उसे सेतु का रूप सुलभ कराती है। हिंदी विश्व की एक प्राचीन समृद्ध तथा महान भाषा होने के साथ ही हमारी राजभाषा भी है। हिंदी जनसाधारण की भाषा है और सभी जनकल्याणकारी योजनाएं तभी प्रभावी बन सकेंगी जब उनकी जानकारी आम जन की भाषा में उन तक पहुंचेगी। पत्रिका के माध्यम से भाषा के विकास में सहयोग भी मिलता है।

मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि ''**राजभाषा विश्वामित्री**'' का द्वितीय अंक कार्यालय में राजभाषा के अधिकाधिक प्रयोग को बढ़ावा देने में सहायक सिद्ध होगी तथा कर्मचारियों की रचनाशीलता को गति मिलेगी। मैं, इसके प्रकाशन से जुड़े कार्यालय के सभी सदस्यों को हार्दिक बधाई देता हूँ तथा इसके अनवरत प्रकाशन की कामना करता हूँ।

शुभकामनाओं सहित ।

भवन्निष्ठ,

रामजी लाल मीना

श्री विमल रावत
उप निदेशक (प्रभारी),
उप क्षेत्रीय कार्यालय, वड़ोदरा,
क.रा.बी. निगम, वड़ोदरा - 390007

क्षेत्रीय कार्यालय
कर्मचारी राज्य बीमा निगम
(श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार)
पंचदीप भवन, आश्रम रोड,
अहमदाबाद-380014 (गुजरात)

Regional Office
Employee's State Insurance Corporation
(Minisrty of Labour & Employment, Govt. of India)
"Panchdeep Bhavan", Ashram Road,
Ahmedabad-380014 (Gujarat)
E-mail: rd-gujarat@esic.gov.in
Phone-079-27582400/450

हेमंत कुमार पांडेय
क्षेत्रीय निदेशक (प्रभारी)

अ.शा.पत्र सं: 37.ए.49.17.4.2011-रा.भा.
दिनांक : 15.06.2024

संदेश

प्रिय श्री रावत जी

मुझे अत्यंत प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है कि उप क्षेत्रीय कार्यालय, वड़ोदरा द्वारा हिंदी गृह पत्रिका ''**राजभाषा विश्वामित्री**'' के द्वितीय अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। गृह पत्रिका का प्रकाशन भारत सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वियन के लिए महत्वपूर्ण कड़ी है और राजभाषा के प्रति संवैधानिक कर्तव्यों का पूरी सजगता से अनुपालन का द्योतक है। इसके प्रकाशन द्वारा प्रेरणा और प्रोत्साहन की नीति से कार्मिकों में राजभाषा हिंदी में कार्य करने की प्रवृत्ति में वृद्धि होगी। राजभाषा हिंदी का प्रयोग निश्चित ही सामाजिक सुरक्षा को गति देने का माध्यम है।

मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि ''**राजभाषा विश्वामित्री**'' का द्वितीय अंक कार्यालय में राजभाषा के अधिकाधिक प्रयोग को बढ़ावा देने तथा कार्यालय की अन्य महत्वपूर्ण गतिविधियों के प्रचार-प्रसार में सहायक सिद्ध होगा तथा कर्मचारियों की रचनाशीलता को गति मिलेगी। मैं, इस पुनीत कार्य से जुड़े कार्यालय के सभी सदस्यों को हार्दिक बधाई देता हूँ तथा इसके अनवरत प्रकाशन की कामना करता हूँ।

शुभकामनाओं सहित ।

भवनिष्ठ,

हेमंत कुमार पांडेय

श्री विमल रावत
उप निदेशक (प्रभारी),
उप क्षेत्रीय कार्यालय, वड़ोदरा,
क.रा.बी. निगम, वड़ोदरा - 390007

संरक्षक की कलम से

"विश्वामित्री के दूसरे संस्करण के संरक्षक के रूप में आप सभी का हार्दिक स्वागत करता हूँ । मुझे गर्व है कि इस पत्रिका की प्रथम उदघाटन संस्करण मेरे कार्यकाल में प्रकाशित हुई थी और उसे सभी वर्गों से सराहना मिली थी।

हमारी यह पहल वार्षिक रूप से जारी रहेगा और हम उम्मीद करते हैं कि इस पत्रिका के अनेक संस्करण प्रकाशित होंगे। हमारे स्टाफ का निरंतर योगदान और पाठकों का समर्थन हमें प्रेरित करते रहेंगे।

मै आशा करता हूँ कि इस बार भी आप सभी को हमारा प्रयास पसंद आएगा और आपके सुझाव और प्रतिक्रियाए हमें और बेहतर बनाने में सहायता करेंगी।"

विमल रावत,
उप निदेशक(प्रभारी)
कर्मचारी राज्य बीमा निगम,
उप क्षेत्रीय कार्यालय, वड़ोदरा

संपादक की कलम से

मुझे हमारे उप क्षेत्रीय कार्यालय वड़ोदरा की वर्ष 2024-25 की गृह पत्रिका **राजभाषा विश्वामित्री** (द्वितीय अंक) का प्रकाशन करते हुए अत्यंत हर्ष हो रहा है। यह प्रत्येक कार्यालय का प्रयास रहता की वह नियमित रूप से अपनी गृह पत्रिका प्रकाशित करता रहे और पत्रिका को सर्वोच्च बनाने का और उसको पत्रिकाओं की प्रतियोगिता में अव्वल आने का सपना होता है। हम सभी जानते हैं की गृह पत्रिका अपने कार्यालय की एक ऐसी पत्रिका होती जो सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को अपने भाव/विचार व्यक्त करने का माध्यम बनती है और यह सबको एक समान अवसर देती है जिसके जरिये वे अपनी राजभाषा हिंदी के प्रति अपनी रुचि और इसको बढ़ावा देने और इसके कार्यान्वयन में सक्रिय योगदान देकर अपना अमूल्य योगदान देतें है। हमारी राजभाषा हिंदी उत्तर से दक्षिण और पूर्व से पश्चिम तक पूरे भारत वर्ष को एक पवित्र धागे में पिरोये हुए हैं और देश के साथ मानव समाज को भी जोड़ा हुए है क्योंकि हमारी हिंदी भाषा सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है और प्रिय है मधुर है और दिल को छूने वाली भाषा है।

हम हमारी इस पत्रिका में अपनी रचनाएँ/संदेश/सुझाव/प्रतिक्रिया/सहयोग देने के लिए सभी उच्च अधिकारियों और कर्मचारियों को बहुत बहुत आभार और धन्यवाद देतें है ।

किसी भी पत्रिका को और अधिक सफल और उत्कृष्ट बनाने के लिए पाठकों के सुझाव/प्रतिक्रिया बहुत महत्वपूर्ण होती है इसलिए आपके सुझावों प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

महादेव मीना
उप निदेशक, (प्रभारी राजभाषा)
कर्मचारी राज्य बीमा निगम
उप क्षेत्रीय कार्यालय, वड़ोदरा

फरिश्तों से मुलाकातः याय मठ की चोमो

कल, 2 अक्टूबर का दिन मेरे लिए एक यादगार और रोमांचक सफर का हिस्सा बना। मैं तुरतुक की यात्रा पर निकला था, जो भारतीय वास्तविक नियंत्रण रेखा (LAC) के आखिरी गाँव थांग तक जाती है। यह गाँव लद्दाख की श्योक घाटी के छोरबट घाटी हिस्से में स्थित है। यहाँ के बाल्टी लोग अपने अनोखे रहन-सहन, रीति-रिवाज़ और संस्कृति के लिए जाने जाते हैं। तुरतुक के लोगों का स्वागत करने का तरीका बहुत ही मिलनसार था, और उनकी संस्कृति में लद्दाखी मेहमाननवाज़ी की झलक स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। यह क्षेत्र 1947 में पाकिस्तान द्वारा अनधिकृत कब्जे में ले लिया गया था, जिसे 1971 में भारतीय सेना और स्थानीय बाल्टी लोगों ने वापस भारत के नियंत्रण में ले लिया था।

श्री गुलाम हुसैन, स्थानीय बालती निवासी जिन्होंने भारितीय सेना के 1971 अभियान में आपूर्ति लाइन को सुचारू रखने में योगदान दिया।

इस यात्रा से मुझे इस साहसिक कार्य की कर्म भूमि, नुब्रा गाइर्स के "SAVIOUR OF LADAKH" के प्रकरण को पढ़ने का मौका मिला और मुझे कर्नल चेवांग रिनचेन के बारे में जानने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उन्हें लद्दाख के शेर के नाम से भी जाना जाता है और वह महावीर चक्र से सम्मानित होने वाले भारत के सबसे कम आयु के सैनिक (17 साल) थे और वह उन छह सैन्य कर्मियों में से एक हैं जिन्हें प्रेरक नेतृत्व, अदम्य साहस, पहल और कर्तव्य के प्रति असाधारण समर्पण प्रदर्शित करने के लिए दो बार महावीर चक्र से सम्मानित किया गया है।

Sign बोर्ड नुब्रा गाइर्स के "SAVIOUR OF LADAKH" के योगदान को उल्लेखित करता रिकॉर्ड।

रात को नुब्रा घाटी के डिस्किट में बिताने के बाद, आज, 3 अक्टूबर 2021, का मेरा लक्ष्य पांगोंग-सो झील तक पहुंचना था। यह 13,800 फीट की ऊंचाई पर स्थित है और अपनी फ़िरोज़ा सुंदरता के लिए प्रसिद्ध है। सुबह जल्दी डिस्किट से निकलने का निर्णय लिया क्योंकि हमें 10:00 बजे प्रातः तक श्योक गाँव के चेक पॉइंट को पार करना था, क्योंकि खबरों के अनुसार, सड़क मरम्मत के कारण पांगोंग झील की ओर जाने वाला यातायात 10:00 बजे के बाद अनुमति नहीं था। यह रास्ता श्योक नदी के साथ था और इसे मैं अपने जीवन की सबसे यादगार मोटरसाइकिल राइड में से एक कहूँगा। इस मार्ग पर यात्रा करना बहुत ही रोमांचक था क्योंकि यह आमतौर पर पर्यटकों द्वारा प्रयोग में नहीं लाया जाता है। जैसे-जैसे हम आगे बढ़ते गए, हमें भू-दृश्य में बदलाव देखने को मिला; शुष्क रेगिस्तान से हरियाली में परिवर्तन का अनुभव वाकई आनंदायक था।

डिस्किट गोम्पा

हम तांग्स्टे में पहुंचे और वहाँ से लेह से आने वाले यातायात में मिल गए और पांगोंग झील की ओर बढ़े। मेरी उम्मीदें बहुत कम थीं क्योंकि यात्रा के प्रारंभ में ही मैंने त्सो मोरिरी झील देखी थी और सोशल मीडिया पर पांगोंग झील की हमेशा भीड़भाड़ वाली तस्वीरें ही देखी थीं। लेकिन जब हम वहाँ पहुंचे, तो दृश्य अद्भुत था। झील

पांगोंग झील

का फ़िरोज़ा पानी मंत्रमुग्ध कर देने वाला था। हमने झील के किनारे की एकांतता का अनुभव किया, जहाँ कोई भीड़भाड़ नहीं थी। यहाँ की नैसर्गिक सुंदरता ने हमें पूरी तरह से मंत्रमुग्ध कर दिया और वर्णन से परे है। हमने शानदार नैसर्गिक सुंदरता को अपने कैमरे में सहेजने के लिए भरपूर तस्वीरें खींचीं, जो हमेशा यादों में रहेंगी।

आगे बढ़ते हुए, हम मिराक गाँव पहुंचे और झील के किनारे की यात्रा जारी रखी। यहाँ पहुँच कर आपको सब कुछ समतल दिखता है और आपको एहसास होता है की आप पठार के बहुत नजदीक पहुँच गए है और आपको चारो तरफ ऊँचे पहाड़ो के बीच 4000 मीटर और अधिक की ऊंचाई पर समतल भूमि कर दृश्य विस्मित करता है। मिराक से चुशुल की ओर बढ़ते हुए, हमने किआंग्स (KIANGS - Tibetan Wild Ass) के क्षेत्र में प्रवेश किया और देखा कि ये जंगली गधे हमारी मोटरसाइकिल के आवाज़ से डरकर सड़क से विपरीत दिशा में दौड़ रहे थे। यह एक रोमांचक अनुभव था, जिसमे आप एक जंगली जानवर को स्वछंद बिना किसी बाधा के दौड़ते हुए देखते है और आप भी कल्पना कर सकते है किस तरह मनुष्य की बनाई गयी सीमाओं के बाहर एक स्वतंत्रता है जिसे समय के साथ हम लोग भूलते जा रहे है।

चुशुल वॉर मेमोरियल को जाता रास्ता

चुशुल वॉर मेमोरियल पर भारतीय सेना के योद्धाओं को सलामी देने के बाद, हमने एक बड़ी गलती की। हमने काकसंग-ला का रास्ता पकड़ लिया, काकसंग-ला जो कि 18000 फीट की ऊंचाई पर है। इस रास्ते पर मौसम काफी कठोर हो सकता है, और ठंडी हवा आपको खंजर की तरह काट सकती है, जो की हमने कुछ घंटो के बाद झेला। यह बेहद अलग-थलग मार्ग पर्वत श्रृंखलाओं में बना है और इसका उपयोग शायद ही कभी किया जाता है। आज की योजना में Tsanga-la का रास्ता छोड़ हम लोग अपनी मोटरसाइकिल से काक्संग ला के तरफ चढ़ना शुरू कर दिया जो की एक भारी गलती साबित हुई क्योंकि पहले तो रास्ता अच्छा तारकोल युक्त-रोड वाला था पर जैसे ही हम लोग काक्संग ला के नजदीक पहुँचने लगे तो एहसास हुआ की रास्ता मात्र खचर मार्ग है और चढ़ाई बहुत खड़ी होने की वजह से अब मोटरसाइकिल्स के पहियों को पकड़/grip के लिए भी मश्ककत करनी पड़ रही थी। शिखर तक जाने वाली सड़क, काफी ख़राब है। इसकी क्रूरता के कारण, स्थानीय लोग इस सड़क को 'नरक' मानते हैं। हमें तो बाद में पता चला इस सड़क को क्यों लोग Hell Road कहते है। काकसंग ला की ओर चढ़ाई कठिन थी और ऊँचाई के कारण हवा में ऑक्सीजन की कमी के कारण मेरी बाइक को शक्ति की कमी हो रही थी। ठंडी हवाओं ने स्थिति को और भी कठिन बना दिया। काकसंग ला टॉप पर पहुंचने के बाद, हमें हड्डी कंपा देने वाली हवाओं का सामना करना पड़ा। हमारे पास मोबाइल नेटवर्क नहीं था, इसलिए हम अंधेरे में ही आगे बढ़ते रहे।

दो घंटे की कठिनाई के बाद, हमें दूर से कुछ रोशनी दिखाई दी। जैसे ही हम नजदीक पहुंचे, हमें पता चला कि यह याये मठ है जो की 15691 फीट की ऊंचाई पर है। याये मठ का गेट बंद था और ठंड में ठिठुरते हुए हम निराश

याये मठ की रसोई

हो गए। तभी हमने एक आकृति को देखा जो नजदीक आ रही थी। वह एक बौद्ध योगिनी थी, हमने सोचा की चलो इनसे ये ही पूछ लिया जाए अगला गाँव कितनी दूरी पर है, हमारी बातों से उनको पता चल गया की हम लोग रास्ता भटक गए है और उन्होंने हमें मठ में शरण देने का प्रस्ताव दिया, जिसे हमने सहर्ष स्वीकार कर लिया। योगिनी ने हमें ले जाकर गर्म पानी

03.10.2021 की रात

दिया और लकड़ी के चूल्हे के पास बैठने का अवसर दिया क्योंकि वहां खाना पकाने के लिए जलाई गयी आग से गर्मी थी। उनका आतिथ्य अद्वितीय था। हमें चाय, बिस्किट और गरम पुलाव खिलाया गया, जिससे हमें राहत मिली। ऐसा लग रहा था की पूरा मठ हमारे स्वास्थ्य और सुरक्षा के प्रति चिंतित है। अभी मै अपने मित्रो के साथ यह सोच ही रहा था कि हमारी मूर्खता के कारण अकारण ही इन योगिनो को इतनी समस्या दे दी तभी पता चला की हमारी तरह कुछ स्थानीय लोग भी रास्ता भटक गए है और उन्हें भी मठ की योगिनो ने सहर्ष रात के लिए शरण दे दी है। इसके पश्चता हम लोग अपने को इतना भी मूर्ख नहीं समझ रहे थे।

GOODBYE PICTURE WITH NUNS

रात के लिए योगिनियों ने हमें अपने गुरु के ध्यान कक्ष में ठहरने की व्यवस्था की। इस तरह, 3 अक्टूबर 2021 की रात मुझे और मेरे मित्रो को याय मठ की योगिनियों ने प्रकृति के तत्वों से बचाया। अगले दिन सुबह हमने मठ को अलविदा कहा और हानले वेधशाला की ओर बढ़े।

इसी के साथ याय मठ के फरिश्तो के साथ हमारी ये भेंट सम्पूर्ण हुई जो कि जिंदगी भर के लिए एक याद बन गयी ।

परिशिष्ट भाग

1. मुख्य योगिनी/नन के साथ बातचीत के दौरान, मैंने उनसे पूछा कि अगर मैं कभी वापस आऊं तो उनके लिए क्या ला सकता हूँ। उन्होंने कहा कि उन्हें जलाऊ लकड़ी की व्यवस्था करने में काफी मुश्किल होती है। अगर कोई याय मठ की यात्रा करता है, तो कृपया जलाऊ लकड़ी लेकर जाएं, जो उन देवदूतों के प्रति आभार व्यक्त करने के लिए एक छोटा योगदान हो सकता है जिन्होंने उस रात हमें बचाया और हमारी तरह अनगिनत भटके हुए राहगीरों को अपनी यात्रा पूरी करने में समर्पण के साथ सहायता की है।
2. BRO और भारतीय सेना को इन क्षेत्रों को सुगम और सुरक्षित बनाए रखने के लिए धन्यवाद।
3. बौद्ध योगिनी को तिब्बती भाषा में चोमो, जोमो (CHOMO or JOMO -basically, nun), और भी कभी अनी (ANI-basically, aunt) से संबोधित किया जाता है।

विमल रावत,
उप निदेशक(प्रभारी)

सामाजिक सुरक्षाः गिग वर्करः गिग अर्थव्यवस्था

आज हम सब मोबाइल ओर उनमे मौजूद ऐप पर पूरी तरह निर्भर है, जैसे हमें कुछ खाना मंगाना हो, घर का सामान खरीदना हो, कपडे खरीदना हो, कही घूमने के लिए जाना हो, यानी हमारे जीवन में कोई भी कार्य हो,पहलू हो आज ऑनलाइन से कोई भी वस्तु प्राप्त करने कि प्रवृति की संस्कृति अब हर घर घर तक पहुँच चुकी है। इसमें जाति, वर्ग, आयु जैसा कोई भेद नहीं है, हम दिन प्रतिदिन छोटी से लेकर बड़ी वस्तु तक को मंगवाने के लिए विभिन्न प्रचलित और अप्रचलित ऐप पर निर्भरता और इसके माध्यम से घर–गृहस्थी के संचालन की प्रवृति बढती जा रही है। यह एक माध्यम बनती जा रही है हर समस्या के हल के रूप में, एक उत्पाद/वस्तु की त्वरित पहुंचाने की, परन्तु इसका अंजाम क्या होगा? जो इन वस्तुओ को पहुंचाने वाले व्यक्ति जिनको गिग वर्कर कहते है, यह अकुशल भी हो सकते है और कुशल भी, इनको स्वयं का रोजगार भी मिल रहा है परन्तु इन गिग वर्कर कि सामाजिक सुरक्षा के बारे कोई नहीं सोचता हैं। इस व्यवस्था में इंसान को निरंतर आलसी बनाने कि प्रवृति के मध्य इस सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था की पारदर्शिता से हम सब अनभिज्ञ है। हमे तो बस सुगमता का ही एहसास है। हमारी इस अज्ञानता का लाभ वर्तमान में ऑनलाइन क्रय व्यवस्था अनुचित लाभ ले रही हैं। एक ओर निर्भरता की पराकाष्ठा की और बढता इंसान हैं, तो दूसरी और छिपा गंतव्य और बढ़ती अपारदर्शी प्रवृत्तियाँ जिनसे आमजन अनभिज्ञ है। आमजन तो इसी मायाजाल में है कि घर बैठे, सस्ती और समान गुणवत्ता की वस्तुओं/सामान उसे प्राप्त हो रही हैं, लेकिन यह वास्तविकता नहीं है। नियम कानून के अभाव में अनेक ऑनलाइन प्लेटफोर्म जैसे (नोरी), स्वीगी, फ्लिप्कार्ट, अमेजन, बिगबास्केट आदि अन्य ऐप है जहाँ हजारो लाखो कर्मचारी कार्य करते है, गिग व्यवस्था विभिन्न स्तरों पर अपारदर्शी कारोबार में लिप्त है, जिनके यहाँ कोई सामाजिक सुरक्षा व्यवस्था सेवा सुविधाए, आर्थिक सुरक्षा नहीं मिलती हैं।

गिग वर्कर्स ने आमजन के जीवन को सुगम बनाया है पर इस व्यवस्था की कीमत उन्हें भी चुकानी पड़ रही है क्योंकि उनको कोई नियत वेतन नहीं मिलता,परिवार को सामाजिक सुरक्षा नहीं मिलती, भविष्य सुरक्षित नहीं होता,और परिवार की कोई सुरक्षा, व्यवस्था लाभ नहीं मिलता है। जहाँ एक ओर उपभोक्ता (आमजन) अपारदर्शी व्यापार व्यवस्था का शिकार हो रहा हैं, वही सेवा प्रदत करने वाले गिग वर्कर भी असुरक्षित वातावरण में कार्य कर रहे है प्रतिवर्ष लगभग 17 प्रतिशत की दर से बढ़ने वाली गिग अर्थव्यवस्था वर्तमान में कुल सकल घरेलू उत्पाद का करीब 1.25 प्रतिशत ही हैं लेकिन अगामी वर्षो में गैर कृषि क्षेत्र में इसके माध्यम से लगभग 9 करोड़ रोजगार के अवसर सृजित होंगे। ये गिग वर्कर अकुशल से लेकर अतिकुशल तक सभी स्तर के होंगे और इनमे वेतन एवं पारिश्रमिक कि अत्यधिक विसंगतिया भी दुर्भाग्य पूर्ण हैं। विषमता की पराकाष्ठा वाली इस गिग व्यवस्था में कार्य कर रहे हैं, वही कुशलता के आधार पर व्यवसायरत लोग अपनी नेटवर्थ के परम हैं।

बढती गिग अर्थव्यवस्था का प्रवाह न तो रोका जा सकता हैं, न ही यह उचित हैं, लेकिन कानून के माध्यम से गुणवत्ता, तोल–माप,और पारदर्शिता के सख्त नियंत्रण से उपभोक्ताओं को शिकार होने से बचाया जा सकता हैं। जैसे कि ऑनलाइन प्लैटफ़ॉर्म पर वास्तविक मूल्य वजन और अवधिपार होने कि तारीख का स्पष्ट उल्लेख हो। साथ ही गिग वर्कर्स के लिए सामाजिक सुरक्षा आवरण भी होना चाहिए जो कि आने वाले समय में हमारा सामाजिक संगठन कर्मचारी राज्य बीमा निगम के द्वारा इन गिग वर्कर्स को सामाजिक सुरक्षा प्रदान की जा सकती हैं।

महादेव मीना
उप निदेशक

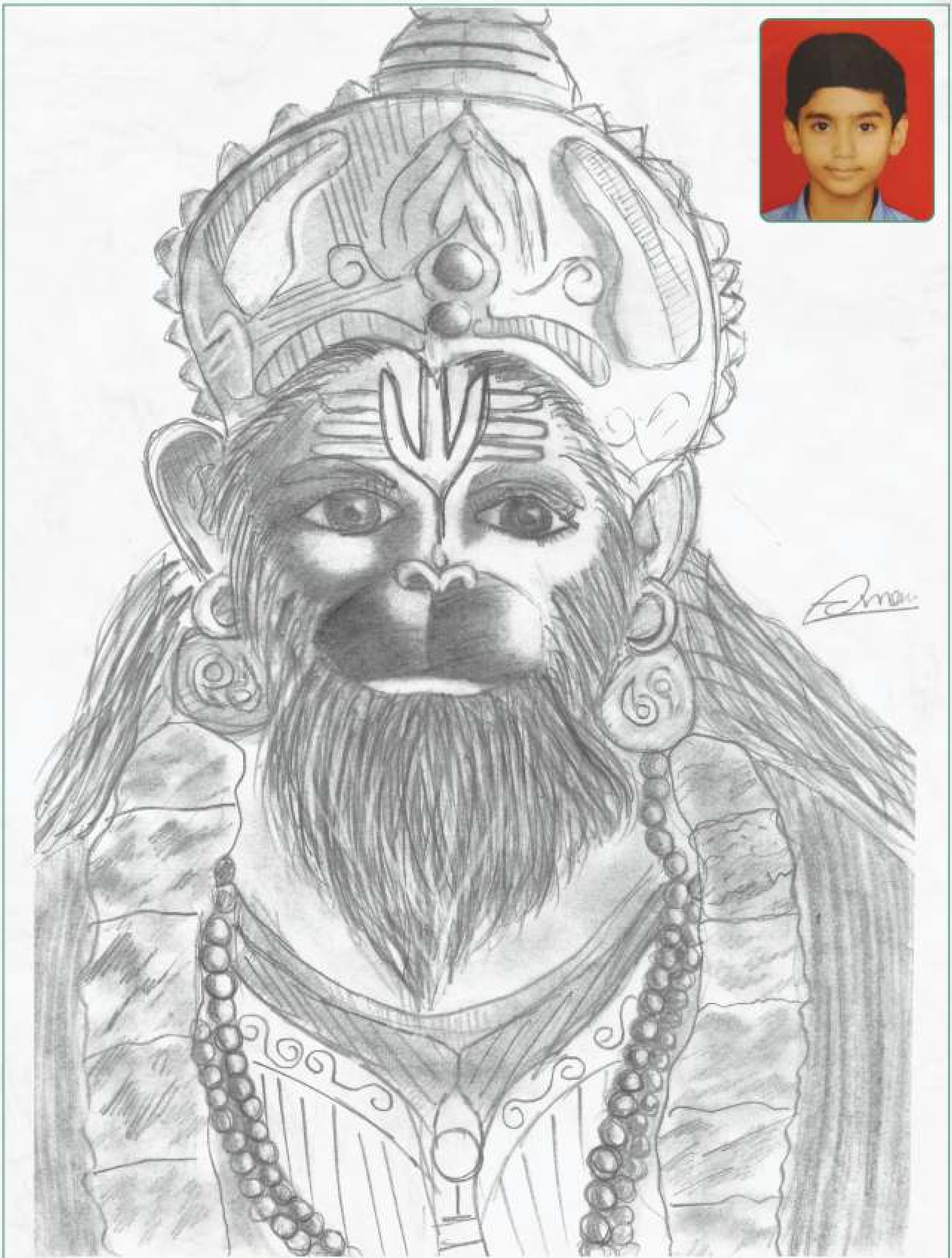

तनिष कुमार मीना
भतीजा श्री महादेव मीना
(उप निदेशक)

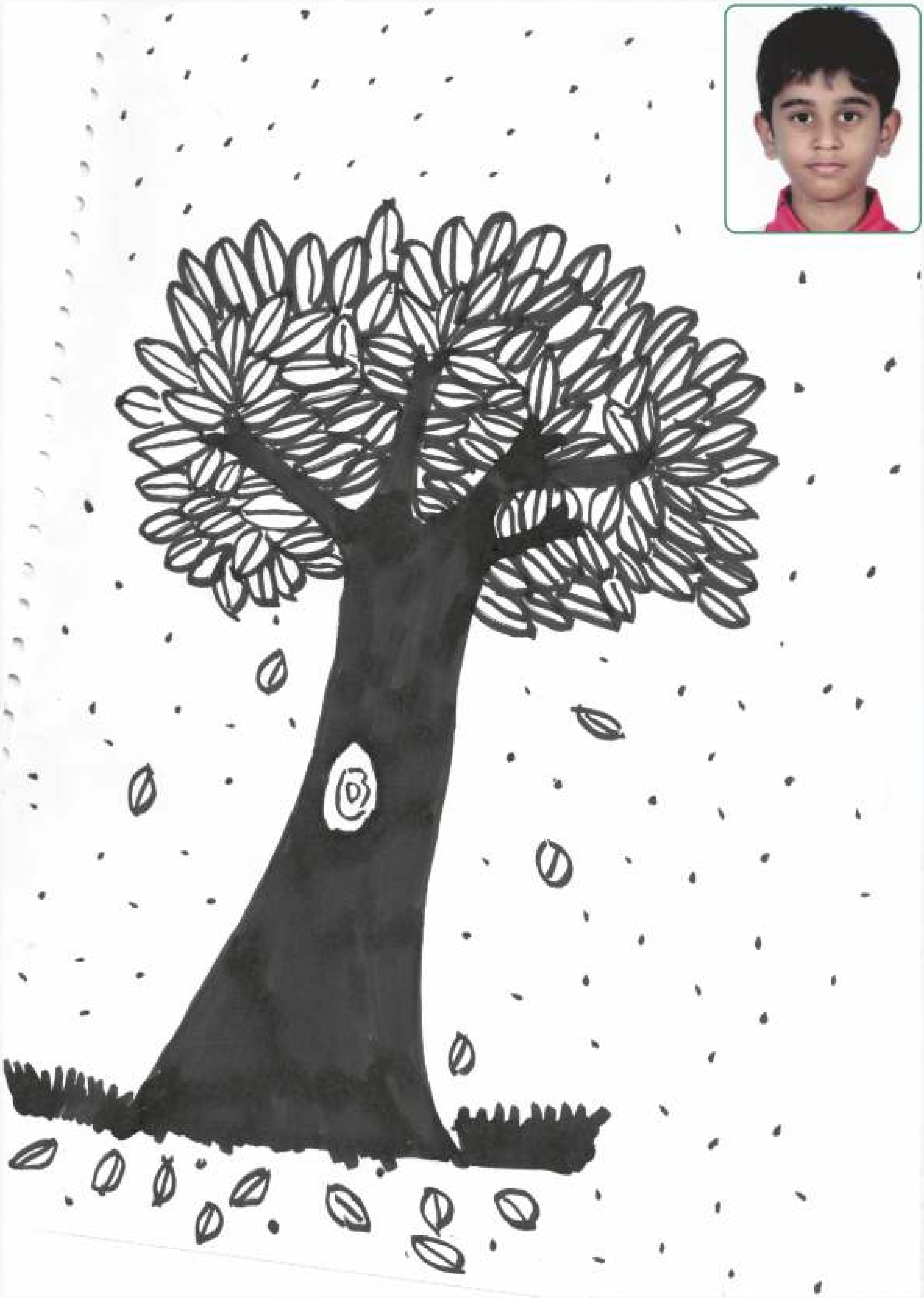

रोनित राज
पुत्र श्री कुमार कुंजन
(सहायक निदेशक)

वक़्त...

जब मैं बहुत कम आ पाता था
तुम उस वक़्त भी अक्सर आ जाया करते थे
जब मैं मिलने से घबराता
तो तुम मेरा हाथ थाम लिया करते थे
मैं जब उलझन मे रहता कि अपनी पहचान कैसे बनाऊँ
तो वो तुम ही थे जो हौसला बढ़ाया करते थे
चाहे दुनिया ने मेरे साथ कितनी भी जहालत की हो
पर तुम उस वक़्त भी मेरे जज्बातों की कद्र करते थे
मेरे दिल की वो कोरी किताबे तुम्हे याद हैं
जिसे तुम कितने रंगों से भर दिया करते थे
क्या गजब के वो दिन थे...
हम कुछ भी बात करते
और खुश हो जाया करते थे
मैं तुम्हे कितना अच्छा लगता और तुम मुझे कितने अच्छे लगते थे..,........
पर बात अब जाकर समझ मे आई
कि शायद ना हम उतने अच्छे थे और ना तुम उतने अच्छे थे
अगर कुछ सबसे अच्छा था तो वो वक़्त था...
वो वक़्त था जो हमने साथ बिताए थे और जिसने ये सारे एहसास कराए थे

अनमोल नफरत..

सितम थोड़ा और भी कर सकती हो
क्योंकि दर्द सहने की शक्ति थोड़ी बाकी है
देखो वार तुम्हारा मुक़म्मल नही हुआ
क्योंकि अभी भी थोड़ी जान मुझमे बाकी है
पता नही क्या क्या तुम पर जुल्म किये हैं
जो इतने घाव देने के बाद भी तुझमे नफरत अभी भी बाकी है
वैसे चलो अच्छा ही किया जो हमे ये सिखा दिया
कि प्यार का मोल नही पर
नफरत अनमोल होता है... नफरत अनमोल होता है

परिवर्तन

मैं वही हूँ पर देखने के अंदाज़ बदल गए हैं
ये मिट्टी वही है पर अब दोस्त बदल गए हैं
घर भी वही है पर रिश्ते बदल गए हैं
भूख भी वैसी ही लगती है पर खिलाने के अंदाज़ बदल गए हैं
ये देश भी वही है पर इसके रंग बदल गए हैं. इसके रंग बदल गए हैं

श्री दिलीप कुमार झा
सहायक निदेशक

'उद्धव गीता'

बचपन से ही, उद्धव कृष्ण के साथ रहे थे, उनका रथ चलाते थे और कई तरह से उनकी सेवा करते थे। उन्होंने श्रीकृष्ण से कभी कोई इच्छा या वरदान नहीं मांगा। जब कृष्ण अपना अवतार पूरा करने के कगार पर थे, तो उन्होंने उद्धव को बुलाया और कहा, प्रिय उद्धव, मेरे इस अवतार में अनेक लोगों ने मुझसे वरदान माँगे और प्राप्त किये; लेकिन तुमने मुझसे कभी कुछ नहीं पूछा. अब कुछ क्यों नहीं पूछते ? मैं तुम्हे दूंगा । आइए मैं आपके लिए भी कुछ अच्छा करने की संतुष्टि के साथ इस अवतार को पूरा करूं।'

भले ही उद्धव ने अपने लिए कुछ नहीं मांगा, लेकिन वे बचपन से ही कृष्ण को देखते रहे थे । वह हमेशा कृष्ण की शिक्षाओं और कार्यों के बीच स्पष्ट अलगाव के बारे में सोचते थे, और इसके कारणों को समझना चाहते थे। उन्होंने कृष्ण से पूछा, 'भगवान, आपने हमें एक तरह से जीना सिखाया, लेकिन आप स्वयं एक अलग तरीके से रहते हैं । महाभारत के प्रकरण में, आपने जो भूमिका निभाई, आपके कार्यों में, मुझे कई बातें समझ में नहीं आईं । मैं आपके कार्यों के कारणों को समझने के लिए उत्सुक हूं । क्या आप मेरी जानने की इच्छा पूरी करेंगे?' कृष्ण ने कहा, 'उद्धव, मैंने कुरुक्षेत्र के युद्ध के दौरान अर्जुन को जो बताया वह भगवद गीता थी । आज आपके प्रति मेरी प्रतिक्रियाएँ 'उद्धव गीता' के नाम से जानी जाएंगी। इसीलिए मैंने तुम्हें ये मौका दिया. कृपया बिना किसी हिचकिचाहट के पूछें।'

उद्धव पूछने लगते हैं 'कृष्ण, पहले यह बताओ कि सच्चा मित्र कौन है?' कृष्ण कहते हैं, सच्चा मित्र वह है जो जरूरत पड़ने पर बिना बुलाए भी अपने मित्र की मदद के लिए आ जाता है।'

उद्धव : 'कृष्ण, आप पांडवों के प्रिय मित्र थे। उन्होंने आप पर 'आपदाबांधव' (सभी कठिनाइयों से बचाने वाला) के रूप में पूरा भरोसा किया। कृष्ण, आप न केवल जानते थे कि क्या हो रहा है, बल्कि आप यह भी जानते थे कि क्या होने वाला है। आप महान ज्ञानी हैं । अभी आपने सच्चे, घनिष्ठ मित्र की परिभाषा बतायी । तो फिर आपने उस परिभाषा के अनुरूप कार्य क्यों नहीं किया। आपने धर्मराज (युधिष्ठर) को जुआ खेलने से क्यों नहीं रोका ? ठीक है, आपने ऐसा नहीं किया; आपने भाग्य को धर्मराज के पक्ष में क्यों नहीं मोड़ा, जिससे आप यह सुनिश्चित करते कि धर्म की जीत होती। आपने वो भी नहीं किया । अपनी संपत्ति, देश और खुद को खोने के बाद आप कम से कम खेल रोककर धर्मराज को बचा सकते थे । आप उसे जुए की सज़ा से मुक्त कर सकते थे । जब उसने अपने भाइयों पर दांव लगाना शुरू किया तो आप हॉल में प्रवेश कर सकते थे । आपने वो भी नहीं किया । कम से कम जब दुर्योधन ने द्रौपदी (जो हमेशा पांडवों के लिए सौभाग्य लेकर आई थी) को दांव पर लगाने पर उसकी खोई हुई हर चीज लौटाने की पेशकश करके धर्मराज को प्रलोभित किया था, तो आप हस्तक्षेप कर सकते थे और अपनी दिव्य शक्ति के साथ, आप इस तरह से पासा पलट सकते थे जो अनुकूल हो धर्मराज को ! इसके बजाय, आपने तभी हस्तक्षेप किया, जब द्रौपदी लगभग अपना मर्यादा खो बैठी थी और अब आप दावा करते हैं कि आपने वस्त्र दिए और द्रौपदी का मर्यादा बचाया; आप यह दावा भी कैसे कर सकते हैं – एक आदमी द्वारा हॉल में खींचे जाने और इतने सारे लोगों के सामने निर्वस्त्र किए जाने के बाद, एक महिला के लिए क्या शर्म बची थी ? आपने क्या बचाया है ? जब आप संकट के समय किसी व्यक्ति की मदद करते हैं, तभी आप 'आपदाबांधव' कहलाते हैं । संकट के समय मदद नहीं की तो क्या फायदा ? क्या यह धर्म है ? जैसे ही उद्धव ने ये सवाल किए, उनकी आंखों से आंसू बहने लगे । (ये अकेले उद्धव के सवाल नहीं हैं. हम सभी जिन्होंने महाभारत पढ़ा है, उनके मन में ये प्रश्न आते हैं । हमारी ओर से, उद्धव पहले ही कृष्ण से पूछ चुके थे।)

भगवान कृष्ण मुस्कुरा कर बताया; प्रिय उद्धव, इस संसार का नियम है: 'केवल वही जीतता है जिसके पास विवेक है।' जबकि दुर्योधन के पास विवेक था, धर्मराज के पास इसका अभाव था। इसीलिए धर्मराज हार गये'। उद्धव खोये हुए और भ्रमित थे । कृष्ण आगे कहते हैं: हालाँकि दुर्योधन के पास जुआ खेलने के लिए बहुत सारा धन और संपत्ति थी, लेकिन वह नहीं जानता था कि पासे का खेल कैसे खेला जाता है, इसीलिए उसने दांव लगाते समय खेल खेलने के लिए अपने मामा शकुनि का इस्तेमाल किया । वह विवेक है । धर्मराज भी इसी तरह सोच सकते थे और पेशकश

कर सकते थे कि मैं, उनका ममेरा भाई, उनकी ओर से खेलूंगा। यदि शकुनि और मैंने पासे का खेल खेला होता, तो आपके अनुसार कौन जीतता ? चलो उसे भी भूल जाइए, मैं इस बात को माफ़ कर सकता हूँ कि वह मुझे खेल में शामिल करना भूल गया। लेकिन, विवेक के बिना उन्होंने एक और गलती कर दी । उन्होंने प्रार्थना की कि मैं हॉल में न आऊं क्योंकि वह नहीं चाहते थे कि मुझे पता चले कि दुर्भाग्य से उन्हें यह खेल खेलने के लिए मजबूर होना पड़ा । उन्होंने मुझे अपनी प्रार्थनाओं से बाँध लिया और मुझे हॉल में जाने की अनुमति नहीं दी; मैं हॉल के बाहर ही इंतजार कर रहा था कि कोई मुझे अपनी प्रार्थनाओं के माध्यम से बुलाएगा । यहां तक कि जब भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव खो गए थे, तब भी वे केवल दुर्योधन को कोस रहे थे और अपने भाग्य पर विचार कर रहे थे, वे मुझे याद करना भूल गए । यहाँ तक कि द्रौपदी ने भी मुझे तब नहीं बुलाया जब दुःशासन ने अपने भाई की आज्ञा पूरी करने के लिए उसके बाल पकड़ लिए और उसे घसीटा । वह अपनी क्षमताओं के आधार पर हॉल में बहस भी कर रही थी । उसने मुझे कभी याद नहीं किया । अंततः अच्छी समझ की जीत हुई; जब दुशासन ने उसे निर्वस्त्र करना शुरू किया तो उसने अपनी ताकत पर भरोसा करना छोड़ दिया और चिल्लाने लगी 'हरि, हरि, अभयम कृष्ण, अभयम ' और मुझे अन्तर्मन से पुकारा । और तभी मुझे उसकी लाज बचाने का मौका मिल गया । जैसे ही मुझे बुलाया गया, मैं पहुंच गया । मैंने उसकी लाज बचा ली । अब बताओ इस स्थिति में मेरी क्या गलती है ?

उद्धव कहते हैं 'अद्भुत व्याख्या, कान्हा, मैं आपकी बात से प्रभावित हुआ परन्तु, मैं धोखा नहीं खाऊंगा । क्या मैं आपसे एक और प्रश्न पूछ सकता हूँ'। कृष्ण अनुमति देते हैं । अब उद्धव पूछते हैं, 'इसका मतलब यह है कि तुम तभी आओगे जब तुम्हें बुलाया जाएगा । क्या आप संकट में फंसे लोगों की मदद करने, न्याय स्थापित करने के लिए खुद नहीं आएंगे ?'। कृष्ण मुस्कुराये और बोले; 'उद्धव, इस जीवन में हर किसी का जीवन उनके कर्मों के आधार पर आगे बढ़ता है । मैं इसे नहीं चलाता; मैं इसमें हस्तक्षेप नहीं करता. मैं तो सिर्फ एक 'गवाह' हूँ. मैं आपके करीब खड़ा हूं और जो कुछ भी हो रहा है उसे देखता रहता हूँ. यह भगवान का धर्म है'।

उद्धव कहते हैं ' वाह, बहुत अच्छा कृष्ण। उस दशा में आप हमारे निकट खड़ा रहोगे, और हमारे सब बुरे कामों को देखोगे; जैसे-जैसे हम और अधिक पाप करते रहेंगे, आप हमें देखते रहेंगे। आप चाहते हैं कि हम और अधिक गलतियाँ करें, पाप जमा करते जाये और कष्ट सहें।

कृष्ण कहते हैं. उद्धव, कृपया अपने बयानों के गहरे अर्थ को समझें। जब आप समझते हैं और महसूस करते हैं कि मैं आपके बगल में गवाह के रूप में खड़ा हूं, तो आप कुछ भी गलत या बुरा कैसे कर सकते हैं। आप निश्चित रूप से कुछ भी बुरा नहीं कर सकते। तुम यह भूल जाओ और सोचो कि तुम मेरी जानकारी के बिना कुछ भी कर सकते हो । तभी आप मुसीबत में पड़ जाते हैं। धर्मराज की अज्ञानता यह थी कि उसने सोचा कि वह मेरी जानकारी के बिना जुआ खेल सकता है । यदि धर्मराज को यह एहसास हो गया होता कि मैं साक्षी के रूप में हर समय सबके साथ मौजूद हूं, तो क्या खेल का अंत अलग तरह से नहीं होता ?

उद्धव मंत्रमुग्ध थे और भक्ति से बहुत अभिभूत थे । उन्होंने कहा, 'कितना गहन दर्शन है, केशव। कितना बड़ा सत्य है । यहां तक कि प्रार्थना करना और पूजा करना और उसे मदद के लिए बुलाना हमारी भावनाओं/विश्वासों के अलावा और कुछ नहीं है । जब हम यह विश्वास करने लगते हैं कि उसके बिना कुछ भी नहीं चलता, तो हम साक्षी के रूप में उसकी उपस्थिति को कैसे महसूस नहीं कर सकते ? हम इसे कैसे भूल सकते हैं और कार्य कर सकते हैं? संपूर्ण भगवद गीता में, यही वह दर्शन है जो कृष्ण ने अर्जुन को दिया था । वह अर्जुन के सारथी और मार्गदर्शक थे, लेकिन उन्होंने अर्जुन से युद्ध नहीं लड़ा':- एहसास करें कि परम साक्षी / जो गवाह है वह आपके भीतर और भीतर है । और उस ईश्वर चेतना में विलीन हो जाओ । अपने उच्च स्व की खोज करें - शुद्ध प्रेमपूर्ण और आनंदमय सर्वोच्च । कृपया महसूस करें कि भगवान हर समय हमारे साथ हैं, जब आप अच्छा करते हैं तब भी और जब आप गलती करते हैं तब भी ।

श्री प्रभात कुमार बारिक
सहायक निदेशक

गोर्गोन मेडुसा

बी इप्सिता
पुत्री श्री पी. के. बारिक,
सहायक निदेशक

मेरा भारत महान

लेखिका का जन्म 4 नवंबर सन 1979 में, झारखंड राज्य के दुमका जिला में हुआ है । इनकी शिक्षा संस्कृत विषय से स्नातक हैं। लेखिका का हिन्दी से प्रेम व लगाव जग जाहीर है। ये भारत सरकार के श्रम मंत्रालय के अंतर्गत कर्मचारी राज्य बीमा निगम में कार्यरत हैं । हिन्दी के प्रति इनकी समर्पण ने इन्हे हमेशा हिन्दी के प्रचार प्रसार से जोड़े रखा हैं। इसी संदर्भ में हिन्दी के उत्थान हेतु आयोजित नाराकास प्रतियोगिता में स्वरचित कविताओं, निबंधों, भाषणों, कहानियों के लिए पुरस्कृत की जाती रही हैं।

नशों में जिसके बहता राष्ट्रवाद था,
विरत्व जिसका शृंगार था । था जिसके हिमालय सा फौलादी सीना, वो नौ सेना का रक्षक जहाज, खुकरी का सरदार था । दुश्मनों के छक्के छुड़ाकर शोर्य का परचम लहराया, सर्वश्रेष्ठ कार्य को बलिदान का नाम न देने का पैगाम फैलाया।
मौत और खतरों से जिसका चोली दामन का साथ था,
जोश और ओज से भरा उसका व्यक्तित्व बेमिसाल था।
वो वीर सपूत महेन्द्रनाथ मुल्ला खुकरी का सरदार था,
तिरंगे की खातिर जीना और मरना यही उसका उद्घोष था,
प्रणवाक्षर में निहित जिसके भारत माँ की ममता का आगोश था।
सन इकहत्तर की वो काली रात,
शत्रु ने किया जब खुकरी पर आघात।
मौजूद था मुल्ला खुकरी में थे संग कई जवान,
चीरकर सीना सागर का गूंजी एक आवाज मेरा भारत महान।
दिया मौका किस्मत ने वापस जीवन पाने का,
ठुकरा दिया मुल्ला ने जाने न दिया मौका भारत माँ का पूत कहलाने का।
जलमग्न हो गई खुकरी जलसमाधि बनी जवानों की,
स्वर्णिम इतिहास की गाथा बन गई इनकी बलिदानी भी।
जाबाजों के जाबाज ने क्या खूब मर्दानी दिखाई,
ऐसे वीर सपूतों से गौरवान्वित हो हर बेटे की माई।
ऐसे रणबाकुरों को आओ करें सब प्रणाम,
इनकी वीरता के आगे छोटे हैं सारे किस्से तमाम।
भारत माँ की जय बोलो, या बोलो मेरा भारत महान।

सीता कुमारी
पत्नी श्री बिनयकुमार जायसवाल
(सहायक निदेशक)

यूनिकोड आसान है, इसे अपनाएं

भाषा संस्कृति की वाहक व संरक्षक होने के साथ–साथ उसके उन्नयन और संवर्धन का सतत कार्य करती है। भारत के संविधान के भाग–XVII के अनुच्छेद–343 में दर्शित है कि संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी होगी, संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग होने वाले अंकों का रूप भारतीय अंकों का अंतर्राष्ट्रीय रूप होगा।
हिंदी भारत संघ की राजभाषा होने के साथ कई राज्यों व केंद्र शासित प्रदेशों की राजभाषा है तथा संपर्क भाषा के रूप में लगभग पूरे भारतीय उपमहाद्वीप के साथ–साथ विश्व के कई भू–भागों में प्रयुक्त होती है । आइए विश्व की दूसरी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा के गौरव को बढ़ाने एवं अपने भाषा संबंधी दायित्वों के निर्वहन को परिपक्वता तथा पूर्णता देने हेतु इसके मानक रूप का जन–जन तक व्यापक प्रचार–प्रसार करें व इसके लिखित रूप को आधुनिक संचार माध्यमों के लिए सशक्त बनाने में अपनी भूमिका का निर्वहन करें। इस महत्वपूर्ण भाषायी कार्य को आत्मसात करने के लिए यूनीकोड एक आवश्यक सरोकार है।

यूनीकोड –

यूनीकोड शब्द कंप्यूटर व सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र का सर्वाधिक चर्चित शब्द बनता जा रहा है, इसे यूनीवर्सल कोड भी कहा जाता है।वास्तव में यूनीकोड एक टेक्नोलॉजी (Technology) है जो भाषा प्रौद्योगिकी के नव मानकों में शामिल है। यह विश्व–स्तरीय मानक है, जो उपयोग कर्ता के लिए निःशुल्क है। इसके अपनाने से हम अधिक दक्षता व तीव्रता के साथ भाषायी टंकण का कार्य निष्पादित कर सकते हैं। इससे फाइलों के आदान–प्रदान में सुविधा रहती है व फोंट के परम्परागत झंझटो से निजात मिल जाती है।

यूनिकोड कन्सॉर्शियमःसमय की भाषाई जरूरतों के आलोक में वैज्ञानिकों, गणितज्ञों, भाषाविदों व कंप्यूटर प्रयोक्ताओं ने वैश्विक स्तर पर ऐसी एनकोडिंग प्रणाली की आवश्यकता महसूस की, जो विश्व की सभी लिखित भाषाओं की लिपियों की एनकोडिंग कर सके। इस आवश्यकता की पूर्ति के लिए यूनिकोड एनकोडिंग कन्सॉर्शियम, लाभ न कमाने वाला एक संगठन है की स्थापनायूनिकोड स्टैंडर्ड, जो आधुनिक सॉफ्टवेयर उत्पादों और मानकों में पाठ की प्रस्तुति को निर्दिष्ट करता है, के विकास, विस्तार और इसके प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए की गई थी। इस कन्सॉर्शियम के सदस्यों में, कम्प्यूटर और सूचना उद्योग में विभिन्न निगम और संगठन शामिल हैं। कन्सॉर्शियम ने 8,16 तथा 32 बिट की कोडिंग प्रणाली बनाई, जिसमें प्रत्येक कैरेक्टर के लिए एक विशेष नंबर का प्रयोग किया गया। इस कोडिंग प्रणाली में विश्व की लगभग सभी लिखित भाषाओं के 65,536 वर्णों के लिए कोड निर्धारित किए गए, इसे यूनीकोड कहा जाता है।
भारत सरकार के राजभाषा विभाग द्वारा हिंदी के राजभाषा के रूप में प्रयोग बाबत एक वार्षिक कार्यक्रम जारी किया जाता है जिसकासंघ सरकार के मंत्रालयों/अधिनस्थ कार्यालयों/उपक्रमों/बैंको/निगमों/निकायों आदिके द्वारा अनुपालन राजकीय दायित्व है। राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम में कार्यालयों के सभी कंप्यूटरों में हिंदी में काम करने हेतु केवल यूनीकोड एनकोडिंग का प्रयोग करने पर बल दिया गया है।

यूनीकोड एनकोडिंग एक आसान प्रक्रिया हैजिसमें कंप्यूटर के कंट्रोल पैनल में जाकर हिंदी भाषा को एक्टीवेट किया जाता है। इसके बारे में विस्तार से जानने के लिए आप राजभाषा विभाग की वेबसाइट rajbhasha.gov.in आई टी टूल्स शीर्षक का अवलोकन करें।

यूनीकोड एक्टीवेट करने के बाद आपके डेस्कटोप पर भाषा चयन के लिए स्टेटसबार पर Hi तथा Enचिह्न आ जाते हैं, जिससे आप भाषा का चयन कर सकते है। भाषा चयन के लिए माउस या फिर की–बोर्ड के Alt व Shift की का प्रयोग करें। हिंदी का चयन करने पर टंकण के लिए इंस्क्रिप्ट कुंजीपटल की–बोर्ड ले–आउट आ जाएगा।
इंस्क्रिप्ट की–बोर्ड हिंदी भाषा का अधिकृत व मानक की बोर्ड है जो भाषा की वैज्ञानिकता व मूल प्रवृति के अनुकूल है। इसके प्रयोग से टंकण सहज, सरल, शुद्ध व तीव्र गति से किया जा सकता है। अतः इंस्क्रिप्ट की–बोर्ड पर

टंकण के कार्य की अपेक्षा की जाती है। टंकण सीखने वाले नव अधिकारी व कर्मचारी इसी पर अभ्यास करें। कार्यालयों में अधिकारी व कर्मचारियों की एक बड़ी तादाद फोंट आधारित टंकण करती आ रही है, जिन्हे अलग से टंकण सीखने की आवश्यकता नहीं है। उन्हें यूनीकोड में टंकण कार्य के लिए अपने कंप्यूटर में भाषा इंडिया डॉट कॉम (bhashaindia.com/download) वेबसाइट से निशुल्क Indic-2 या 3 आवश्यकता अनुसार डाउनलोड कर इंस्टॉल कर रेमिंगटन/टाइपराइटर की-बोर्ड ले आउट चुनना होगा। विस्तृत जानकारी के लिए राजभाषा विभाग की वेबसाइट rajbhasha.gov.in आई टी टूल्स के कंप्यूटरों में हिंदी सक्रिय कैसे करें? शीर्षक का अवलोकन करें। टंकण के लिए इंस्क्रिप्ट कुंजीपटल का प्रयोग ही कार्यालयों में हो, यह अपेक्षित है परन्तु तात्कालिक आवश्यकताओं के परिप्रेक्ष्य में ऐसे अधिकारी व कर्मचारी जिन्हें अधिक टंकण का कार्य नहीं करना पड़ता या अंग्रेजी टंकण में अभ्यस्त हैं वे फोनेटिक की-बोर्ड का चयन कर सकते हैं। इसके लिए Indic-2/3, Google Input tools इंस्टाल करें और तुरंत टंकण करना शुरू करें। फोनेटिक की-बोर्ड समेकित रूप में आगे दिया जा रहा है-

यूनिकोड लिप्यं तरण(Transliteration)-फोनेटिक की-बोर्ड

अ a	आ aa	इ I	ई ee	उ u	ऊ oo	ए E	ऐ ai/ei	ओ o	औ au/ou	अं a^	अः aH/a:	अँ aM
ऋ Ru/Ri	ॐ OM		ऑ/ A	ऍ A	ऑ O	अन्य चिह्न(, . /? ' " : ; [{}]- _ आदि अंग्रेजी की-बोर्ड की जगह ही आएंगे।						पूर्ण विराम shift \
क ka	ख kha	ख़ Kh	ग ga	ग़ G	घ gha	ङ Nga	च cha	छ chha	ज ja	ज़ z	झ jha	ञ Nja
ट Ta	ठ Tha	ड Da	ड़ D_a	ढ Dha	ढ़ Dh_a	ण Na		त ta	थ tha	द da	ध dha	न na
प pa	फ f./Pha	फ़ F	ब ba	भ bha	म ma			य ya	र ra	ल la	ळ L	व va/wa
श sha	ष Sha	स sa	ह ha			क्ष kSha /Xa	त्र Tra	ज्ञ Gya/jNja	श्र shra	श्रृ shrR		

मात्राएँ:

क ka	का Kaa	कि ki	की kee	कु Ku	कू koo	के ke	कै kai/kei	को ko
कौ kou	कं k^	कः kH	कँ kM	कॉ kO	कॅ kA	कृ kRu/kRi	क्र kra	र्म rma

प्रयोग:

भारत	Bhaarat	भरत	bharat
षष्ठ	ShaShTha	कल्कि	kalki
प्रसिद्ध	Prasiddha	नीला ग्रह	neelagrah
पक्का	Pakkaa	गृह	gRha

*(Capital letters **के लिए** shift key **का प्रयोग करें**)

स्पष्ट है कि हिंदी यूनीकोड टंकण अब बेहद आसान हो गया है। इंसक्रिप्ट की-बोर्ड हिंदी टंकण का मानक की बोर्ड है, जो अन्य भारतीय भाषाओं में भी लगभग इसी रूप में है। फोनेटिक व रेमिंगटन वैकल्पिक की-बार्ड हैं। अतः नव टंकक प्रशिक्षुओं को इंस्क्रिप्ट की-बोर्ड अपनाने की सलाह दी जानी चहिए।

प्रमाणित किया जाता है कि यह मेरा मौलिक लेख है।

डॉ. दिनेश सिंह
सहायक निदेशक, गहन भाषा हिंदी प्रशिक्षण केंद्र
राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, वडोदरा – 390 002, दूरभाषः 7822956411

कलयुग, घोर कलयुग

ज्योतिष और पौराणिक ग्रंथो में युग का मान अलग अलग हैं ।
पौराणिक ग्रंथो के अनुसार चार युग होते है- सतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग और कलयुग।
कहते है कि कलयुग में पाप अपने चरम पर होगा। वर्तमान में कलिकाल
अथार्त कलयुग चल रहा है । यह भी है कि इस युग में जब कही भी प्रलय
होगा तो सिर्फ हरि कीर्तन ही उसे बचाऐगा।
कलयुग केवल नाम अधारा, सुमीर सुमीर नर उतरही पारा ।।
इस कलयुग में भगवान का नाम ही आधार है। केवल नाम सुनने से,जपने से मानव भवसागर से उतर जाता है।

कलयुग का वर्णन श्रीकृष्ण की नजर में-

1. कलयुग का वर्णन करते हुए श्रीकृष्ण कहते है कि कलयुग में ऐसे लोगो का राज होगा, जो दोनों और से शोषण करेंगे। बोलेंगे कुछ और करेंगे कुछ मन में कुछ और कर्म में कुछ। कलयुग में ऐसे लोग रहेंगे, जो बड़े ज्ञानी और ध्यानी कहलायेंगे । वे ज्ञान की चर्चा तो करेंगे, लेकिन उनके आचरण होंगे। बड़े पंडित और हमारे नाम से संपति या पद कर जाए ।
2. कलयुग का मनुष्य शिशुपाल हो जाएगा । कलयुग में बालको के लिए ममता के कारण इतना करेगा कि उन्हें अपने विकास का अवसर ही नहीं मिलेगा। मोह-माया में ही घर बर्बाद हो जाएगा। इतनी सारी ममता होगी कि बालक मोह-माया और परिवार में ही बंधकर रह जाएगा और उसका जीवन वही खत्म हो जाएगा। अंत में बेचारा अनाथ होकर मरेगा ।
3. कलयुग में धनवान लोग लड़के-लड़की के विवाह में, मकान के उत्सव में, छोटे-बड़े उत्सवो में तो लाखो रूपए खर्च कर देंगे, परन्तु पड़ोस में ही यदि कोई भूखा-प्यासा होगा तो यह नहीं देखेंगे कि उसका पेट भरा है या नहीं। उनका अपना ही सगा भूख से मर जाएगा और वे देखते रहेंगे। दूसरी और मौज, मदिरा, मांस-भक्षण, सुन्दरता और व्यसन में पैसे उड़ा देंगे किंतु किसी के दो आंसु पोछने में उनकी रूचि न होगी ।
4. कलयुग में मानव का मान नीचे गिरेगा, उसका जीवन पतित होगा। यह पतित जीवन धन की शिलाओ से नहीं रुकेगा, नहीं सत्ता के वृक्षों से रुकेगा। किंतु हरि नाम के एक छोटे से पौधे से, हरि कीर्तन के एक छोटे से पौधे से मनुष्य जीवन का पतन होना रुक जाएगा।

हे राम,तुम्हारे युग का रावण अच्छा था,
चेहरे दस थे पर,
दस के दस चेहरे बाहर रखता था।

कभी आके देखो मेरे युग में
यहाँ एक नहीं हर घर में रावण है।
न तो उसके दस चेहरे बाहर है और
न तो बीस भुजाएं। अब तुम हि बताओ कैसे उसको पहचानु ?

हे राम, तुम्हारे युग का रावण अच्छा था,
एक बार जलाया तुमने ...
फिर कभी वापस न आया ।

कभी देखो मेरे युग का रावण भी,
हर साल जलाते है,
फिर भी न जाने कहां से लौट आता है ।
आके फिर हमें ही जलाता हैं ।

हे राम,तुम्हारे युग का रावण अच्छा था,
सुना है उसने सीता को अगवा किया था ।
लेकिन उसे छुआ तो नहीं....
कभी देखो मेरे युग के रावण को....
जिसने सीता को जिंदा भी छोड़ा नहीं ।
हे राम, तुम्हारे युग का रावण अच्छा था ।

ख़ुशी मीना पुत्री श्री टीका राम मीना
सामाजिक सुरक्षा अधिकारी

भारत का नया संसद भवन

अपना देश भारत एक लोकतांत्रिक देश है।

संसद इस देश के लोकतंत्र के मंदिर के समान है । हाल ही मे देश को नया संसद भवन मिला। नये संसद भवन का निर्माण 2019 मे शुरू किया गया था । नये संसद भवन की डिजाईन आर्किटेक्ट बिमल पटेल द्वारा तैयार की गयी ।

नए संसद भवन की आवश्यकता :

भविष्य मे लोकसभा सीटों की संख्या बढ़ने की सम्भावना

कर्मचारियों के लिये पर्याप्त कार्यक्षेत्र की जरूरत

डिजिटलीकरण की जरूरत

ज्यादा सुरक्षित संरचना तैयार करना

नई संसद से संबंधित प्रमुख बिंदु:

त्रिकोणीय आकार:

नए संसद भवन का स्वरूप विभिन्न धर्मों में पाई जाने वाली पवित्र ज्यामिति से प्रभावित है। इसका डिजाइन और सामग्री पुरानी संसद की पूरक है, साथ ही दोनों भवनों का एक परिसर है।

पर्यावरण के अनुकूल:

हरित निर्माण तकनीकों के उपयोग के कारण निर्मित नए भवन में पुराने भवन की तुलना में विद्युत की खपत में 30% की कमी आने की उम्मीद है । इसमें वर्षा जल संचयन और जल पुनर्चक्रण प्रणालियों को शामिल किया गया है । इमारत को भूकंप-सुरक्षित बनाया गया है ।

लोकसभा:

नए लोकसभा कक्ष में एक मोर विषयवस्तु को अपनाया गया है, जिसमें दीवारों और छत पर राष्ट्रीय पक्षी के पंखों के समान नक्काशीदार डिज़ाइन तैयार किये गए हैं, जो टील कार्पेट से सुसज्जित हैं। लोकसभा कक्ष में वर्तमान के 543 के बजाय 888 सीटें होंगी, जिसकी क्षमता बढ़कर 1,272 हो जाएगी। सेंट्रल हॉल के अभाव में लोकसभा का उपयोग दोनों सदनों की संयुक्त बैठक हेतु किया जाएगा।

राज्यसभा:

राज्यसभा कक्ष को लाल कालीनों के साथ इसकी थीम के रूप में कमल से सजाया गया है।

राज्यसभा कक्ष अब 250 की मौजूदा क्षमता के विपरीत 384 संसद सदस्यों (सांसदों) को समायोजित कर सकता है।

संविधान सभागार:

नए भवन में एक संविधान सभागार बनाया गया है, जहाँ भारतीय लोकतंत्र की यात्रा का दस्तावेज़ीकरण किया गया है।

भारत भर से सामग्री:

भवन के आंतरिक और बाहरी निर्माण के लिये देश भर से विभिन्न प्रकार की निर्माण सामग्री लाई गई है, जिसमें धौलपुर के सरमथुरा से बलुआ पत्थर और राजस्थान राज्य के जैसलमेर जिले के लाखा गाँव से ग्रेनाइट शामिल है। इसी प्रकार साज-सज्जा में प्रयुक्त लकड़ी नागपुर से लाई गई और मुंबई के शिल्पकारों ने इस पर वास्तुशिल्प डिज़ाइन का कार्य किया है। उत्तर प्रदेश के भदोही के बुनकरों ने भवन के लिये हाथ से बुने पारंपरिक कालीन बनाए हैं।

गांधी प्रतिमा:

मूल रूप से वर्ष 1993 में संसद के मुख्य द्वार पर स्थापित की गई महात्मा गाँधी की 16 फुट ऊँची काँस्य प्रतिमा को पुराने और नए भवनों के बीच स्थानांतरित कर दिया गया है।

यह अब लोकसभा अध्यक्ष द्वारा उपयोग किये जाने वाले प्रवेश द्वार के समीप पुराने भवन के सामने है। यह प्रतिमा छात्रों और संसद सदस्यों के विरोध, सभाओं और फोटो-ऑप्स के लिये एक महत्त्वपूर्ण स्थल रही है।

इसे पद्मा भूषण पुरस्कार से सम्मानित प्रसिद्ध मूर्तिकार राम वी सुतार ने बनाया था।

राष्ट्रीय चिह्न:

यह भवन राष्ट्रीय प्रतीकों से भरा हुआ है, जिसमें राष्ट्रीय प्रतीक अशोक स्तंभ के सिंह को भवन के शीर्ष पर स्थापित किया है जिसका वज़न 9,500 किलोग्राम है और ऊँचाई 6.5 मीटर है।

इस विशाल काँस्य प्रतिमा को सहारा देने के लिये सेंट्रल फोयर के शीर्ष पर 6,500 किलोग्राम की संरचना का निर्माण किया गया है। भवन के प्रवेश द्वार पर अशोक चक्र और 'सत्यमेव जयते' शब्द पत्थरों पर अंकित किये गए हैं।

गोल्डन राजदंड:

अंग्रेजो से सत्ता के हस्तांतरण को चिह्नित करने के लिये आज़ादी की पूर्व संध्या पर जवाहरलाल नेहरु को दिया गया गोल्डन राजदंड (सेन्गोल) स्पीकर के पोडियम के पास नए लोकसभा कक्ष में रखा जाएगा।

डिजिटलीकरण की ओर:

नई संसद के पर्यावरण के अनुकूल दृष्टिकोण के अनुसार सभी रिकॉर्ड- सदन की कार्यवाही, प्रश्न और अन्य व्यवसाय को डिजिटलाइज किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त टैबलेट और आईपैड एक आदर्श प्रदर्शित करेंगे।

भवन में गैलरी:

'शिल्प' नामक एक गैलरी सभी भारतीय राज्यों की मिट्टी से बने मिट्टी के बर्तनों के साथ-साथ पूरे भारत के वस्त्र प्रतिष्ठानों को प्रदर्शित करेगी। गैलरी 'स्थापत्य' भारत के प्रतिष्ठित स्मारकों को प्रदर्शित करेगी जिनमें विभिन्न राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों के स्मारक शामिल हैं। स्मारकों के अतिरिक्त यह योग आसनों को भी समाहित करती है।

फौकॉल्ट पेंडुलम:

नए संसद भवन के अंदर स्थापित एक फौकॉल्ट पेंडुलम है जिसे संसद के अक्षांश पर इसे एक चक्कर पूरा करने में 49 घंटे 59 मिनट और 18 सेकंड का समय लगता है।

फौकॉल्ट पेंडुलम, जिसका नाम फ्राँसीसी भौतिक विज्ञानी लियोन फौकॉल्ट के नाम पर रखा गया है, इसका उपयोग पृथ्वी के घूर्णन को प्रदर्शित करने के लिये किया जाता है।

नया संसद भवन विकसित देश की और अग्रेषित करते हुए अपने देश के विकास मे अहम भूमिका अदा करेगा ।

परेश बलदानिया
सामाजिक सुरक्षा अधिकारी
उप क्षेत्रीय कार्यालय वड़ोदरा

जीवन एक क्रिकेट है

सृष्टि के इस जीवन के इस स्टेडियम में,
शरीर के इस पिच पर,
समय बॉलिंग कर रहा हैं,
अस्थियाँ बल्लेबाज हैं,
धर्मराज अम्पायरी कर रहे हैं,
बीमारियाँ फिल्डिंग कर रही हैं,
यमराज विकेट कीपिंग कर रहे हैं,
इस शरीर में आत्मा विकेट का काम कर रही हैं,
इस दिन और रात के मैच में,
मानव को प्रगति के पथ पर चलना हैं,
धर्मराज के दिये धड़कनों के सीमित ओवरो में,
अपना धर्म के साथ कर्तव्य की प्रगति,
पथ पर चलकर तत्परता से पारी खेलनी हैं,
हमे ये ज्ञात नही कब हम एल.बी.डब्ल्यू
(हार्ट फेल) होते हैं,
आज की इस जिन्दगी में कब हम रन आउट,
(दुर्घटनाग्रस्त) होंगें,-
या हमें धर्मराज कि बिना अनुमति के,
हिट विकेट (आत्मघात) या स्टमपिंग,
(हत्या) कर सकता हैं,
मगर हम होनहार बने,
अपनी पारी सृजनता पूरक खेलेते रहें,
इस रंग भूमि पर अपना कीर्तिमान करते रहें,
जनाब इस रंगभूमि पर यह जीवन,
एक क्रिकेट हैं,
जो तत्परता से खेला वो जीता हैं,
वरना हार है, यह जीवन का खेला है।

रिंकू कुमार मीणा
(प्र.श्रे.लि.)
प्रशासन शाखा

निगम गीत

निरुपम, न्यारा, निगम हमारा ।
सदा चमके चमचम, ज्यों ध्रुवतारा ।।

यह सबकी खुशियों का कारण,
दुःखों का करता निवारण,
हैं जाने इसे जगत सारा,
हमारी किस्मत का तारा ।

हमें मिली हैं, रोजी इससे,
नयनों की ज्योति हैं जिससे,
दम पर इसके, घर हमारा,
हमारे आँगन का उजियारा ।

हर रंज, हर गम झेलेंगे,
नहीं इससे, कभी खेलेंगे,
इसके बिना, जीवन नाकारा,
हैं ना कोई और सहारा ।

बीमितों को मार्ग दिखाए,
होठों पर मधुहास जगाए,
न कभी छोड़े, साथ हमारा,
चर्च, मस्जिद, मठ और गुरुद्वारा ।

अपने दुःख-दर्द, सब भूलकर,
रक्षा करेंगे, जान उड़ेलकर,
इसके लिए, तन-मन हमारा,
यह जान लें, जगत सारा ।

बीमितों के लिए हैं वरदान ।
ऐसा हमारा निगम हैं महान ।।

श्री पंखी लाल मीना
प्रवर श्रेणी लिपिक

भारतीय सेना के बारे में आश्चर्यजनक तथ्य

भारतीय सेना का प्रसिद्ध इतिहास दस हजार वर्ष से भी अधिक पुराना है। रामायण और महाभारत दो भव्य महाकाव्य हैं, जो उस मूलभूत ढांचे का निर्माण करते हैं, जिसके चारों ओर भारतीय सेना का निर्माण किया गया है। इसकी उत्पत्ति ईस्ट इंडिया कंपनी की सेनाओं से हुई और आगे चलकर ब्रिटिश भारतीय सेना और रियासतों की सेनाएं बन गईं। 1895 में एकीकृत भारतीय सेना बनाने के लिए बंगाल, बॉम्बे और मद्रास प्रेसीडेंसी की सेनाओं का विलय कर दिया गया।

विभाजन के दौरान, 1947 में भारतीय सेना में एक बड़ा बदलाव देखा गया। इसे दो नव निर्मित देशों के बीच विभाजित किया गया था। दस गोरखा रेजीमेंटों में से चार को अंग्रेजों को हस्तांतरित कर दिया गया। 1835 में असम राइफल्स का गठन किया गया, जो देश का सबसे पुराना अर्धसैनिक बल है।

प्रथम विश्व युद्ध में भारतीय उपमहाद्वीप से 15 लाख से अधिक सैनिक युद्ध में गये। वे सभी प्रमुख युद्धों में लड़े। प्रथम विश्व युद्ध के दौरान वीर भारतीय सैनिकों ने 11 विक्टोरिया क्रॉस, 5 मिलिट्री क्रॉस, 973 इंडियन ऑर्डर ऑफ मेरिट और 3130 भारतीय विशिष्ट सेवा पदक अर्जित किए। प्रथम विश्व युद्ध के 13 अभियानों में 12 घुड़सवार रेजिमेंट, 13 इन्फैंट्री रेजिमेंट और अन्य हथियारों की विभिन्न इकाइयों ने भी भाग लिया। इंडिया गेट का निर्माण प्रथम विश्व युद्ध में शहीद हुए सैनिकों (लगभग 82 हजार) की याद में किया गया था।

भारतीय सशस्त्र बलों की खुफिया शाखा सैन्य खुफिया निदेशालय (एमआई) है। 1941 में सेना के लिए फील्ड इंटेलिजेंस तैयार करने के लिए एजेंसी की स्थापना की गई थी।

भारतीय सेना द्वारा पाकिस्तान के साथ चार प्रमुख युद्ध 1947-48, 1965, 1971 और 1999 के दौरान लड़े गए। सभी युद्धों में भारतीय सैनिकों ने दुश्मन को धूल चटाई है। सबसे प्रसिद्ध युद्ध दिसंबर 1971 में लड़ा गया था। युद्ध चौदह दिनों तक चला था। पूर्वी पाकिस्तान (अब बांग्लादेश) में पाकिस्तानी सेनाएं हार गईं थीं और उनमें से लगभग 93,000 को बंदी बना लिया गया था।

पश्चिम में बड़ी संख्या में पाकिस्तानी क्षेत्र पर भारतीय सैनिकों का कब्जा था। 16 दिसंबर को पाक सेना के बिना शर्त आत्मसमर्पण के साथ पूर्वी मोर्चे पर युद्ध समाप्त हो गया।

पश्चिमी भूटान में भारतीय सैन्य प्रशिक्षण दल (IMTRAT) स्थायी रूप से तैनात है। भारतीय सेना का हाई एल्टीट्यूड वारफेयर स्कूल (HAWS) दुनिया के सबसे विशिष्ट प्रशिक्षण केंद्रों में से एक है।

1948 में ऑपरेशन पोलो लांच किया गया था और यह सफल रहा। यह 5 दिनों तक चला था। इस ऑपरेशन के परिणामस्वरूप हैदराबाद रियासत का भारत में एकीकरण हुआ था।

सितंबर 1897 में हुई सारागढ़ी की लड़ाई को हम कैसे भूल सकते हैं। यह एक शानदार उदाहरण है, जहां भारतीय सेना के जवानों ने बहादुरी दिखाई थी। इस लड़ाई में लगभग 21 सिखों ने चुनौती दी और 10,000 अफगानी सैनिकों से लड़े। इस लड़ाई में सभी सिख मारे गए और दूसरी तरफ 400-600 लोग हताहत हुए। यह युद्ध मानव जाति के इतिहास में सबसे महानतम युद्धों में से एक माना जाता है। इसकी तुलना थर्मोपाइले की लड़ाई से भी की जाती है।

भारतीय सेना भी संयुक्त राष्ट्र शांति स्थापना अभियानों में सबसे बड़े योगदानकर्ताओं में से एक है।

1999 का कारगिल युद्ध भारत के लिए एक और बड़ी उपलब्धि थी, जब भारतीय सेना ने भारतीय सीमा पर कई स्थानों पर कब्जा वापस लिया था, जहां पाकिस्तानी सैनिकों और आतंकवादियों ने घुसपैठ की थी। इस युद्ध में लगभग 3,000 मुजाहिदीन और लगभग 700 पाकिस्तानी सैनिक मारे गए थे।

सुनील चौहान
प्रवर श्रेणी लिपिक

नशा से मुक्ति (विकसित भारत की तरफ एक कदम)

किसी भी समाज में जब हम उसके सामाजिक विघटन के मूल तत्वों की तरफ देखते हैं तो इसमें मुख्य वैयक्तिक विघटन होता है। आज व्यक्ति में विभिन्न तरीकों से उसके व्यक्तित्व का क्षरण हो रहा है। इन सबमें सबसे बड़ा क्षरण मादक द्रव्यों के नशा से हो रहा है। विश्व स्वास्थ्य संगठन इसी को देखते हुए 26 जून को 'नशा मुक्त संसार' का नारा दे रहा है तथा इस बार उसकी मुख्य थीम है कि 'सबूत स्पष्ट हैं, रोकथाम में निवेश करें।' अंतरराष्ट्रीय 'नशा निषेध दिवस' इसलिए मनाया जा रहा है ताकि नशा मुक्त विश्व बन सके और नशे की तस्करी बंद हो सके।

नशीली पदार्थों और उनकी गैर कानूनी तस्करी के विरुद्ध हर साल 26 जून को अंतरराष्ट्रीय नशा निषेध दिवस मनाया जाना चाहिए, इसका आह्वान किया गया था। इसके बाद पहला अंतरराष्ट्रीय नशा निषेध दिवस 26 जून 1989 को मनाया गया। इसका मुख्य उद्देश्य नशीले पदार्थों के सेवन से होने वाली हानि से लोगों को अवगत कराना और उनकी गैरकानूनी तस्करी का विरोध करना था। अब इस दिन हर वर्ष विश्वभर में नशे के खिलाफ जागरूकता से जुड़े कार्यक्रम किए जाते हैं। सामाजिक तौर पर विश्लेषण करें तो देखेंगे यह अवगुण हर वर्ग में बढ़ता ही चला जा रहा है। इतना ही नही सामाजिक परंपराओं की तरह व्यक्ति इसे पीढ़ी दर पीढ़ी आगे भी बढ़ा रहे हैं। इसका परिणाम यह है कि नई पीढ़ी के जिस व्यक्ति को समाज के लिए नवाचार करना चाहिए था, वह पुरानी पीढ़ी के किसी व्यक्ति से जुड़कर इस दलदल में फंस जाता है। तकनीकी और मेडिकल शिक्षा से जुड़े बड़े-बड़े संस्थानों में भी कई विद्यार्थी नशे में लिप्त नजर आते हैं। नशा पहले व्यक्ति के व्यक्तित्व को तोड़ता है। फिर वह सामाजिक ताने-बाने को तोड़ता है, संस्था और परिवार को तोड़ता है। इसके बाद प्रदेश और देश को नुकसान पहुँचाता है।

नशे की गिरफ्त में आए व्यक्ति अपना एक अलग समाज बना लेते हैं। व्यसनी सामाजिक झंझावत से मुक्ति नशे में खोजता है। नशाखोरी की समस्या किसी एक राष्ट्र या देश प्रदेश तक सीमित नहीं है, बल्कि विश्वव्यापी है। इसके पीछे के कारणों की चर्चा करें तो बात स्पष्ट हो जाता है कि भारत के लिए नशे के अवैध व्यापार को रोकना बड़ी चुनौती है। लोगों को नशे की गिरफ्त से बचाने के लिए हमें वैयक्तिक और सामाजिक स्तर पर काउंसलिंग की आवश्यकता है। उसका दायित्व बनता है कि वह समाज के प्रति विशेष चेतन हो और आगे आए। नवयुवकों में फैशन और दिखावे के कारण भी नशे की प्रवृत्ति बढ़ रही है। इसको रोकना चाहिए, उन्हें समझाना होगा। परिवार, मनोवैज्ञानिक सलाहकार, डॉक्टर, अध्यापक, सभी लोगों को एक साथ समन्वय टीम बनाकर व्यक्ति तक पहुंचना होगा। मानवाधिकार संगठनों, जागरूकता में लगी संस्थाओं, को आगे आना होगा। समय-समय पर ड्रग पॉलिसी में परिवर्तन करने जैसे कदम उठाकर इस समस्या पर प्रहार किया जा सकता है।

विकसित भारत के लक्ष्य को या विकसित विश्व के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए नशे से मुक्ति आवश्यक है। समय रहते अगर इस समस्या पर गंभीरता से ध्यान नहीं दिया गया तो यह समस्या दिन दूनी रात चौगुनी बड़ी होती जाएगी। अपने अगल-बगल के जो भी व्यक्ति नशे की गिरफ्त में हैं, उनको इससे मुक्त कराने के लिए सभी को प्रयास करना चाहिए। विकसित भारत का लक्ष्य पाने के लिए यह शुरुआत जरूरी है।

रंजीत कुमार
सहायक

बेटे भी घर छोड़ जाते हैं

हर उस बेटे को समर्पित जो घर से दूर है..
तकिये के बिना कहीं...भी सोने से कतराते थे
आकर कोई देखे तो वो...कहीं भी अब सो जाते हैं
खाने में सो नखरे करने वाले..अब कुछ भी खा लेते हैं
अपने रूम में किसी को...भी नहीं आने देने वाले
अब एक बिस्तर पर सबके....साथ एडजस्ट हो जाते हैं
बेटे भी घर छोड़ जाते हैं.!!
घर को मिस करते हैं लेकिन...कहते हैं 'बिल्कुल ठीक हूँ'
सौ-सौ ख्वाहिश रखने वाले....अब कहते हैं 'कुछ नहीं चाहिए'
पैसे कमाने की जरूरत में वो घर से अजनबी बन जाते हैं
लड़के भी घर छोड़ जाते हैं।
बना बनाया खाने वाले अब वो खाना खुद बनाते है,
माँ-बहन-बीवी का बनाया अब वो कहाँ खा पाते है।
कभी थके-हारे भूखे भी सो जाते हैं।
लड़के भी घर छोड़ जाते है।
मोहल्ले की गलियां, जाने-पहचाने रास्ते,
जहाँ दौड़ा करते थे अपनों के वास्ते..
माँ बाप यार दोस्त सब पीछे छूट जाते हैं
तन्हाई में करके याद, लड़के भी आँसू बहाते है
लड़के भी घर छोड़ जाते हैं
नई नवेली दुल्हन, जान से प्यारे बहिन- भाई,
छोटे-छोटे बच्चे, चाचा-चाची, ताऊ-ताई ,
सब छुड़ा देती है साहब, ये रोटी और कमाई..!
मत पूछो इनका दर्द वो कैसे छुपाते हैं,
बेटियाँ ही नही साहब, बेटे घर छोड़ जाते हैं.. बेटे घर छोड़ जाते हैं...!

नरोत्तम कुमार मीणा
प्रवर श्रेणी लिपिक

द हीलिंग पॉवर ऑफ़ म्यूजिक एंड बुक्स

''जहाँ शब्द ख़त्म होते है, वही से संगीत शुरू होता है''

इस कथन को हर वह इंसान महसूस कर सकता है जिन्होंने किताबे एवं संगीत के हीलिंग पॉवर को समझा है या कभी न कभी अपनी जिंदगी में किसी भी तरीके से इनसे मदद मिली हो। मैने किताबो में हमेशा वह शक्ति महसूस की है जो हमारे मन को शांति और ज्ञान से भर देती है। किताबे एक तरीके से हमारे सपने को, हमारी सोच को पंख देती है जिससे हमारे सपनो को उड़ान मिलती है एवं सपने को पूरा करने की प्रेरणा भी मिलती है। किताबे और दरवाज़े दोनों ही ऐसी चीज़े है जिनके खुलते ही ऐसा लगता है जैसे हम कोई और ही दुनिया में आ गए हो। किताबे ज्ञान का भंडार है और संगीत भावना की अभिव्यक्ति, दोनों मिलकर हमारे जीवन को सम्पूर्ण बनाते है।

पुस्तक स्वयं की मनोस्थिति को समझने के लिए एक शक्तिशाली उपकरण हो सकता है जो वास्तव में एक प्रकार की चिकित्सा है जिसकी हम सभी को आज के समय में आवश्यकता है जिसे बिब्लिओथेरपि कहा जाता है। जिसमे साहित्य के माध्यम से मानसिक और भावनात्मक स्वास्थ्य को सुधारने में मददगार है।

जिंदगी है तो उतार चढाव का तो हर किसी को सामना करना पड़ता है और उस मुश्किल समय से गुजरने के लिए किसी न किसी का सहारा हम लेते है उसी प्रकार मैं जब भी किसी वजह से परेशान होती हुँ या बहुत खुश होती हुँ तब मैं अपनी डायरी में मेरी भावनाए शब्दों में पिरोना पसंद करती हुँ जिससे ऐसा लगता है जैसे कि वो कोई दोस्त की तरह मेरे हर सेंटीमेंट्स को समझ रहा है और अलग सा सुकून मिलता है, जिससे कोई भी परेशानी छोटी लगती है और खुशिया दुगुनी हो जाती है। जब कोई भी किताब आप पढ़ते है तो आप जेसे दूसरी दुनिया में प्रवेश करते हो, जहाँ आप ही मुख्य पात्र है, आपके पास निर्णय लेने की सर्वोच्च शक्ति है, और अपनी इच्छा अनुसार काम करने की स्वतंत्रता है।

प्रख्यात सीरीज हैरी पॉटर की लेखिका जे. के. रोलिंगने किताबो के बारे में बताया कि कैसे लेखन ने उन्हें डिप्रेशन के दौरान मदद की। उन्होंने अपनी लेखन प्रक्रिया को चुनौतीपूर्ण समय के दौरान अपनी भावनाओं को व्यक्त करने और सांत्वना पाने का एक तरीका बताया है। गायिका और अभिनेत्री डेमी लोवातो संगीत को अपना सबसे अच्छा मित्र मानते है और कैसे वो गीत लेखन और प्रदर्शन को चिकित्सीय के रूप में उपयोग करते हुए संगीत को अपनी पुनर्प्राप्ति यात्रा के एक महत्वपूर्ण हिस्से के रूप में माना है।

प्राचीन भारत में रागों को न केवल संगीत रचना के रूप में देखा जाता था, बल्कि उपचार और कल्याण के लिए शक्तिशाली उपकरण के रूप में भी देखा जाता था। प्राचीन समय में राग चिकित्सा के नाम से जाना जाने वाला रागों का चिकित्सीय उपयोग पारंपरिक चिकित्सा का अभिन्न अंग था। उदाहरण के लिए:

राग भैरव: ऐसा माना जाता है कि इसका तंत्रिका तंत्र पर शांत प्रभाव पड़ता है और चिंता को कम करने में मदद मिलती है।

राग दरबारी कणाद: अपने सुखदायक और गंभीर स्वर के लिए जाना जाता है, इसका उपयोग अनिद्रा से राहत के लिए किया जाता था।

किताबे और संगीत मेरे जीवन की उपचार शक्ति है। जब भी जीवन की कठिनाइयाँ मुझे घेर लेती हैं, एक अच्छी पुस्तक मुझे नई ऊर्जा और दृष्टि प्रदान करती है, जिससे कि मैं उस कठिनाई में छुपी खूबसूरती को पहचान सकू। संगीत का जादू मेरे मन की गहराइयो को छूता है और हर दर्द को दूर करता है। मधुर धुनें और सुमधुर सार मेरे मन को शांत करते है। इस प्रकार किताबे और संगीत दोनों ही मेरी मुश्किल घड़ी के लिए संजीवनी समान है।

पुस्तक और संगीत के बिना जीवन फूलों के बिना बगीचे के समान है।

नंदिनी के. राठोड
आशुलिपिक

माँ

माँ कहने को तो एक छोटा सा शब्द है लेकिन बच्चों के लिए इस शब्द में पूरा संसार बस जाता है। माँ वो है जो अपने बच्चों के लिए कुछ भी कर जाती है। कहते है की भगवान भी इस लिए बार–बार पृथ्वी पर जन्म लेते है। उन्हें माँ का प्यार मिले, माँ की डांट, माँ की मार और माँ का गुस्सा मिल सके। राम की तीन माताएँ थी और कान्हा की दो माताएँ थी। भगवान हर जगह नहीं होते इसलिए उन्होंने माँ भेजा ताकि हर बच्चे को माँ मिल सके उसकी रक्षा के लिए माँ वो है, जो खुद कितना ही डांट ले, कितना ही मार ले, लेकिन किसी ओर को हाथ तक नहीं लगाने देती, जरा भी उसके बच्चे पर आंच आती तो जमीन आसमान एक कर देती है। माँ बच्चे की पहली गुरु होती है जो बच्चे को सही–गलत सिखाती है। माँ अपने बच्चे के लिए रात भर जागती रहती है ताकि उसके बच्चे को कही भूख तो नहीं लग रही बार–बार देखती कही बच्चा गीले में तो नहीं है। खुद गीले में सोती है पर बच्चे को साफ सुथरी जगह देती है। माँ का प्यार नि:स्वार्थ होता है जिसमे कोई शर्त नहीं होती है। माँ को जितनी बार नमन करे उतना ही कम है। माँ को अपने बच्चों के लिए क्या कुछ नहीं सुनना पड़ता है, तुमने अच्छे संस्कार नहीं दिए, तुमने अपने बच्चें को अच्छे से नहीं पढाया, तुमने अच्छे से ध्यान नही दिया। इतना कुछ करती है माँ हर घडी हर पल बच्चों की ढाल बनती है। माँ के बारे में क्या कहे माँ हर पीड़ा, हर मुश्किल सह लेती है। माँ के लिए हर शब्द छोटा है। माँ के लिए क्या कहे, हे जननी आपको शत–शत नमन माँ।

रोहन कुमार मीना
पुत्र श्री महादेव मीना (उप निदेशक)

ई.एम.आई एक महाजाल

आज के युग में इच्छा शक्ति प्रत्येक व्यक्ति में बढ़ते ही जा रही है चाहे वे घर लेने की बात हो, मोबाइल या गाड़ी। कोई भी व्यक्ति आज किसी से भी नीचे रहकर जीना नहीं चाहता है। छोटे से परिवार के लिए प्रत्येक व्यक्ति जरुरत से ज्यादा बड़ा मकान, गाड़ी या मोबाइल सिर्फ और सिर्फ दिखावे के लिए खरीदकर वे आपने आपको ई.एम.आई के बोझ तले दबता जा रहा है । किसी ने सच्च ही कहा है लोन यह एक चित्रगुप्त का खातावाही है जिसमें एक बार खाता खुल गया तो वह कभी बंद नहीं होता है एक लोन पूरी भी नहीं होती है और दूसरी लोन चालू हो जाती है जिससे इंसान कभी भी बाहर नहीं आ पाता है।

प्रत्येक व्यक्ति का सपना होता है कि उसका एक अपना मकान हो जिसमे वह अपने परिवार के साथ सुख शांति से अपना जीवन यापन कर सके। मैं भी इस सपने के साथ लोन पर मकान लिया तथा क.रा.बी.निगम के क्रेडिट सोसाइटी से चार साल के लिए एक अतिरिक्त लोन भी लिया था आज उस बात को 7 साल हो गए लेकिन क्रेडिट सोसाइटी के लोन का चार साल अभी तक पूरा नहीं हुआ है एक लोन पूरी होती ही नहीं और दूसरी लोन की अर्जी पंहुच जाती है। कभी कभी तो ऐसा लगता है कि सिर्फ ई.एम.आई. भरने के लिए ही कमाना पड़ता है।

अजीतकुमार सिंह
सहायक, निरीक्षण व समन्वय शाखा

ना तेरा हैं, ना मेरा हैं, ये दुनिया तो एक रैन बसेरा हैं

जो करता तेरा–मेरा हैं, सब कुछ उस ही का रहने दो ।
ये जान–माल एक छलावा हैं, जो लोभी हो उसी को लेने दो ।
चंद सांसे मिली जो उधार हैं, इनको तो चैन लेने दो ।
जो मिथ्या हैं उसको छोड़ दो, भले ही दुनिया को करने दो ।
चीटी से लेकर हाथी तक को, दानदाता परमेश्वर हैं ।
धरती पर रहने वाला फिर कहता क्यों हैं, कि खाना खाता मेरा हैं ।
मिलता सबको अपने नसीब का हैं, फिर किस बात का रोना हैं ।
फिर क्यों ही करे शिकवा – गिला किसी से ।
सब तो शब्दों का खेल हैं, जो अपनों को गैर और गैरों को अपना लेता हैं ।
गैर जो बने सब अपने, दर्द समझकर उनसे मेल करे ।
अहंकार रावण सा लिए, टिक न पाये इस दुनिया मैं ।
साधारण सा तू मानव, बचेगा कैसे अपने कर्मो से ।
ना तेरा हैं, ना मेरा हैं, ये दुनिया तो एक रैन बसेरा हैं ।
जब लेगा आखिरी साँस, तब कहेगा कुछ भी नहीं मेरा हैं ।
खाली हाथ तू आया, खाली हाथ ही तुझे जाना हैं ।
जो भी है किया कर्म यहाँ ही भुगतान करके तुझे जाना हैं ।
ना तेरा हैं, ना मेरा हैं, ये दुनिया तो एक रैन बसेरा हैं

जगदीश कुमार मीना
प्रवर श्रेणी लिपिक
बीमा शाखा –2

कड़वा सत्य

तुझे अकेला चलना होगा
न संगी न कोई सहारा
इस नदी का न कोई किनारा
जीवन प्रवाह में बहना होगा
तुझे अकेला चलना होगा ।
जीवन पथ पर घना अँधेरा
नीरवता में नया सवेरा
तुझे दीपक बनकर जलना होगा
तुझे अकेला चलना होगा।
बड़ी जहरीली बारूदी हवा
मानवता के लिए दुआ

तुम्हे शांति दूत अब बनना होगा
तुझे अकेला चलना होगा।
है चारो ओर हिंसा का तांडव
बना दिया इस भू को नीरव
छोड़ शास्त्र,अब वंसीवादक बनना होगा
तुझे अकेला चलना होगा।
ईमान से जो हो विमुख वो कोई इंसान नहीं
सीमा पर युद्ध कोई समाधान नहीं
तुम्हे अपनी राह अब चुननी होगी
तुझे अकेला चलना होगा।

श्री हनुमान प्रसाद
सामाजिक सुरक्षा अधिकारी

समाचार पत्रों में उप क्षेत्रीय कार्यालय, वडोदरा

इएसआइसी के राष्ट्रीय खेल दिवस पर बैडमिंटन टूर्नामेंट

वडोदरा @ पत्रिका. कर्मचारी राज्य बीमा निगम (इएसआइसी) के उप क्षेत्रीय कार्यालय की ओर से बुधवार को राष्ट्रीय खेल दिवस का आयोजन किया गया। शहर में आई बाढ़ के कारण बुधवार को बैडमिंटन का टूर्नामेंट कराया गया। इएसआईसी के उप क्षेत्रीय कार्यालय के उप निदेशक (प्रभारी), विमल रावत, उप निदेशक महादेव मीना, सहायक निदेशक कुमार कुंजन एवं अन्य कर्मचारियों ने इस टूर्नामेंट में भाग लिया। टूर्नामेंट में महादेव मीना, धर्मेन्द्र मीना विजेता, कुमार कुंजन, चौथा राम चौधरी उप विजेता रहे।

पत्रिका

वडोदरा : इएसआइसी कार्यालय में पौधरोपण

वडोदरा @ पत्रिका. विश्व आदिवासी दिवस के उपलक्ष्य में एक पेड़ मां के नाम अभियान के अंतर्गत वडोदरा में कर्मचारी राज्य बीमा निगम (इएसआइसी) के उप क्षेत्रीय कार्यालय परिसर में पौधरोपण किया गया।

उप निदेशक (प्रभारी) विमल रावत, उप निदेशक महादेव मीना, सहायक निदेशक दिलीप कुमार झा, कुमार कुंजन, प्रभात कुमार खरीक एवं सभी अन्य कर्मचारियों ने पौधे रोपे। इस अवसर पर अधिकारियों ने सभी कर्मचारियों को पर्यावरण संरक्षण के लिए पौधे रोपने का संदेश दिया और पर्यावरण के प्रति जागरूक किया।

इएसआइसी उप क्षेत्रीय कार्यालय वडोदरा में हिंदी पखवाड़ा मनाया

वडोदरा @ पत्रिका. भारत सरकार के श्रम एवं रोजगार मंत्रालय के अधीन कर्मचारी राज्य बीमा निगम (इएसआइसी) के उप क्षेत्रीय कार्यालय वडोदरा में हिंदी पखवाड़ा-2024 का आयोजन किया गया।

समापन समारोह में भारत सरकार के गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग के सहायक निदेशक डॉ दिनेश सिंह मुख्य अतिथि थे। उन्होंने इएसआइसी के उपनिदेशक (प्रभारी) विमल रावत, उपनिदेशक महादेव मीना, सहायक निदेशक दिलीप कुमार झा, कुमार कुंजन, प्रभात कुमार खरीक, विमल कुमार जायसवाल के साथ प्रतियोगिताओं के विजेता अधिकारियों एवं कर्मचारियों को पुरस्कार वितरित किए।

समारोह में श्रम एवं रोजगार मंत्री मनसुख मांडविया, केंद्रीय श्रम राज्यमंत्री शोभा करंदलाजे एवं इएसआइसी के महानिदेशक के संदेश सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को पढ़कर सुनाए गए। हिंदी पखवाड़ा-2024 में राजभाषा क्विज, हिंदी भाषण एवं हिंदी निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसमें कार्यालय के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया।

कार्यालय गतिविधियों की झलकियाँ

विश्व आदिवासी दिवस के अवसर पर अधिकारी एवं कर्मचारी पौधा रोपण करते हुए

विश्व आदिवासी दिवस के अवसर पर उप निदेशक प्रभारी को उप क्षेत्रीय कार्यालय वडोदरा के अधिकारी एवं कर्मचारीयों द्वारा पौधा भेट किया गया।

राष्ट्रीय खेल दिवस के अवसर पर आयोजित बैंडमिन्टन प्रतियोगिता के विजेता
श्री महादेव मीना – उप निदेशक (दाये)
श्री धर्मेन्द्र मीना – प्र.श्रे.लि. (बाये)

राजभाषा विश्वामित्री के प्रथम अंक 2023-24 का विमोचन श्री रामजीलाल मीना बीमा आयुक्त (पश्चिम अंचल) द्वारा किया गया।

कार्यालय गतिविधियों की झलकियाँ

हिन्दी कार्यशाला

हिन्दी कार्यशाला सितम्बर 2024 दौरान उप निदेशक (प्रभारी राजभाषा)

हिन्दी कार्यशाला सितम्बर 2024 दौरान श्रीमति अनिता शुक्ल (प्राध्यापक)

हिन्दी कार्यशाला–सितम्बर 2024 के दौरान एक दिवसीय कार्याशाला में उपस्थित कर्मचारी।

हिन्दी कार्यशाला सितम्बर 2024 के दौरान कर्मचारी को उप–निदेशक प्रभारी प्रशस्ति प्रत्र देते हुए।

बैडमिंटन प्रतियोगिता

खेल दिवस के अवसर पर बैडमिंटन प्रतियोगिता में भाग लेने वाले अधिकारी एवं कर्मचारी, उप क्षेत्रीय कार्यालय, वड़ोदरा

कार्यालय गतिविधियों की झलकियाँ

हिन्दी पखवाड़ा-2024

हिन्दी पखवाड़ा-2024 के दौरान आयोजित राजभाषा ज्ञान प्रतियोगिता के प्रथम विजेता को प्रशस्ति पत्र एवं नगद पुरस्कार देते हुए उप निदेशक राजभाषा प्रभारी

हिन्दी पखवाड़ा-2024 के दौरान उप क्षेत्रीय कार्यालय वड़ोदरा में उपस्थित कर्मचारी गण।

हिन्दी पखवाड़ा-2024 के दौरान मुख्य अतिथि को स्मृति चिन्ह देकर सम्मान करते हुए उप निदेशक राजभाषा प्रभारी

हिन्दी पखवाड़ा-2024 के दौरान आयोजित हिन्दी टिप्पण एवं आलेखन प्रतियोगिता के प्रथम विजेता को प्रशस्ति पत्र एवं नगद पुरस्कार देते हुए उप निदेशक राजभाषा प्रभारी

40 वर्ष से अधिक श्रमिको/कामगारो का स्वास्थ्य जाँच शिविर

योग दिवस-2024

स्वच्छता पखवाड़ा के दौरान उप क्षेत्रीय कार्यालय परिसर में कर्मचारी श्रमदान करते हुए।

पुराने दिन

धुंधले से हैं यादों के वो पुराने दिन,
जब हंसते-खेलते थे हम किसी रुकावट बिन।
बचपन की वो शरारतें, नटखट सी बातें,
माँ की गोद, पापा की डांट, सबकी
अपनी-अपनी सौगातें।

स्कूल का मैदान, दोस्तों के संग खेल,
हर शाम की वो मस्ती, हर सुबह का नया मेल।
कभी छुप-छुप कर किताबें पढ़ना,
कभी रोक टोक के साथ बारिश में भीगना,
तो बिन सोचे समझे सब कर जाना
वो दिन थे जब ख्वाबों में उड़ जाना।

हर रोज़ नयी दुनिया बसाने की बातें करते थे।
छोटी-छोटी चीज़ों में खुशियाँ ढूंढ़ते थे,
अब यादों में समेटे हैं वो प्यारे पल,
वक्त के साथ चलते, नए सपने बुनते थे।

जीवन की भागदौड़ में खो गए वो पल
पर दिल के किसी कोने में, वो स्मृतियाँ रही है जल,
पुराने दिन, हर मुश्किल में हमें हौंसला देती हैं
अब भी कभी-कभी, आंखे बन्द कर याद आता है वो कल।

वो दिन, वो साथी, फिर से मिल जाए।
जिंदगी की इस राह में, कुछ देर को ही सही हम गुम हो जाए
फिर से जी लें, पुराने दिन, पुरानी खुशी
कुछ यादें फिर से मन भर जी ली जाए ।।

रवीना चौधरी
प्रवर श्रेणी लिपिक

चलो आगे बढ़ें, नई ऊँचाइयों को

चलो आगे बढ़ें, नई ऊँचाइयों को छूते जाएं, अपनी मंजिल को पाने के सफर में जूझते जाएं।

हार-जीत, सबको स्वीकारना सीखो, खुद को बदलो, नए सपनों को स्वीकारना सीखो।

जीवन के प्रत्येक पल को स्वीकारो, उसकी अनमोलता को नए रंग में सजाओ।

अपनी ताकत पर विश्वास रखो हमेशा, कठिनाइयों को अपने दम पर हराओ।

जीवन के हर मोड़ पर डटकर खड़े रहो, अपनी मंजिल की ओर धीरे-धीरे बढ़ते जाओ।

कभी हार न मानो, अपनी हिम्मत बढ़ाओ, सपनों को हकीकत में बदलने के लिए अपना प्रयास बढ़ाओ।

उठो, बढ़ो, नई उड़ान भरो, अपने जीवन को खुद ही अपनी मिसाल बना लो।

चलो, आगे बढ़ें, नए सफर का स्वागत करें,
खुद को परिवर्तन का नया उदाहरण साबित करें।

गीता बजाज
प्रवर श्रेणी लिपिक

आरामः अगला सबसे अच्छा विकल्प सबसे अच्छा विकल्प क्यों है

जब कोई आपको आराम करने के लिए कहता है, तो शायद यह इसलिए होता है क्योंकि आप अपनी समस्याओं से बड़ा सौदा करते हैं। यहां कुछ उल्टा सलाह दी गई है: आपको खुद को आराम करने की ज़रूरत नहीं है। इसके बजाय अपनी समस्याओं को आराम दें।

सवाल यह नहीं है कि क्या हम सबसे छोटा रास्ता खोज सकते हैं। कोई भी अपनी सभी संभावनाओं की एक सूची को क्रेक कर सकता है और प्रत्येक को माप सकता है। असली मुद्दा यह है कि जैसे-जैसे शहरों की संख्या बढ़ती है, उन्हें जोड़ने वाले संभावित मार्गों की सूची बढ़ जाती है। जैसे-जैसे पैमाना बढ़ता है, यह समस्या सबसे शक्तिशाली कंप्यूटरों की पहुंच से परे होती है। सरल शब्दों में, एक मार्ग सिर्फ कस्बों का एक आदेश है। पाशविक बल द्वारा उन सभी को खोजने की कोशिश करना ताश के पत्तों के डेक को हवा में फेंककर छांटने के बराबर है जब तक कि वे क्रम में न उतर जाएं। यह केवल सिद्धांत में काम करता है।

यात्रा विक्रेता समस्या एक असभ्य समस्या का एक उदाहरण है। एक जिसे हल करना व्यावहारिक रूप से असंभव है! लेकिन यह कहानी का अंत नहीं है। यह हमारे लिए कुछ सीखने का अवसर है: उन समस्याओं से सर्वोत्तम तरीके से कैसे संपर्क करें जिनके इष्टतम उत्तर पहुंच योग्य नहीं हैं। समस्याओं को कैसे आराम करें।

किसी भी समस्या को आराम देने का सबसे सरल तरीका इसकी एक या अधिक बाधाओं को आराम देना है। दूसरे शब्दों में, वास्तविक समस्या को हल करने के बजाय हम उस समस्या को हल करने का प्रयास करते हैं जो हम चाहते हैं कि हमारे पास हो।

विश्लेषण पक्षाघात को कम करने के लिए विश्राम सबसे अच्छा तरीका है। कम समय में सही समाधान के रूप में कम से कम आधा अच्छा उत्तर एक अधिक व्यावहारिक समाधान है। सदा! ऐसे व्यवसाय जो तेजी से आगे बढ़ते हैं और बहुत अधिक अस्पष्टता से निपटते हैं, इस पद्धति का पालन करते हैं। एक सही उत्तर की खोज में समय बर्बाद करने के बजाय, वे बस पूछते हैं, ''हम आराम से समस्या के साथ सही समाधान के कितने करीब पहुंच सकते हैं?'' पता चला, बहुत करीब!

जब तक आप हर बार जब आप एक अड़चन का सामना करते हैं, तो पूर्णता के लिए प्रयास करने वाले युगों को बर्बाद करने के लिए तैयार नहीं होते हैं, कठिन समस्याओं की मांग है कि आप आसान संस्करणों की कल्पना करें और पहले उनसे निपटें। जब सही तरीके से लागू किया जाता है, तो यह प्रगति करने के सर्वोत्तम तरीकों में से एक है।

संदेश सरल लेकिन गहरा है: यदि आप उन समाधानों को स्वीकार करने के इच्छुक हैं जो काफी करीब हैं, तो कुछ बालों वाली समस्याओं को भी सही तकनीकों से जोड़ा जा सकता है। हम सभी किसी न किसी रूप में इसका अभ्यास करते हैं। यह निबंध हमें एक ऐसी प्रणाली बनाने में मदद करता है जो निर्णय लेने की प्रक्रिया को संहिताबद्ध करता है।

शिवम गोयल
(प्रवर श्रेणी लिपिक)

सरकारी कर्मचारी

यूं तो सरकारी दफ्तरों में अक्सर सरकारी नौकर ही पाएं जाते है,
पर उन्ही सरकारी दफ्तरों में होते हैं कुछ लोग जो कुछ अच्छा करना चाहते हैं,
टूटी फूटी चरमराती व्यवस्था में भी हँसी खुशी अपनी जिम्मेदारियां निभाते हैं,
काम ही पूजा हैं इस ख्याल को मन में रख कर अपना हर कर्तव्य निभाते हैं,
अपनी हर जिम्मेदारी पूरी दृढ़ता और निष्ठा से निभाते हैं,
हर दिन कुछ नया सोचकर कुछ बदलाव लाना चाहते हैं,
देने को सहयोग हर पल आतुर ही नजर आते हैं,
हर एक बदलाव में अहम भूमिका निभाना चाहते हैं,
सीमित संसाधनों का सही प्रयोग कर अभूतपूर्व काम कर जाते हैं,
अपनी ऊर्जावान सोच से कई छोटे छोटे पर महत्वपूर्ण बदलाव ले आते हैं,
अपने सहज और सरल विचारों से परिवर्तन की लहर उठाते हैं,
वक्त के साथ साथ परिवर्तन की लौ जला कर निवृति तक जगमगाते हैं,
कुछ खास नहीं होता उनमें वो भी आम लोगो की तरह ही नजर आते हैं,
अपनी सकारात्मक सोच से वो शख्सियत बन जाते हैं ।
मिल जाए जो वो हमें एक बार तो जिंदगी भर नहीं भुलाए जाते हैं ।

चौथा राम चौधरी
प्रवर श्रेणी लिपिक
सामान्य शाखा

पुराने दिन चाहिए..

गांव की छांव चाहिए,
कुछ पुराने लोगों का साथ चाहिए,
पुराना मिट्टी का घर चाहिए,
चूल्हे पे बने पकवान चाहिए,

दादा का प्यार चाहिए,
और दादी कि कहानियां चाहिए,
बाबा का दुलार चाहिए,
फिर से मां की गोद चाहिए,

भैया का हर खेल में साथ चाहिए,
और बहनों का स्नेह चाहिए,
चंदा-गोटी का खेल चाहिए,
और मिट्टी के खिलौने चाहिए,

आम का बगीचा चाहिए,
और आम का अचार चाहिए,
फिर से पुराने यार चाहिए,

साइकिल की सवारी चाहिए,
और बैलगाड़ी का सफ़र चाहिए,
खेतों में लहलहाती फसल चाहिए,
और घर में गाय - बछिया की गूंज चाहिए,

सुबह का कलेवा चाहिए,
रात में बियारी चाहिए,

सयानों का अनुभव चाहिए,
रामायण की कथा चाहिए,
और गीता का उपदेश चाहिए,

सुबह की लालिमा चाहिए,
एक सुहानी शाम चाहिए,
अपनों के बीच थोड़ा अपनापन चाहिए,
हर चेहरे पे मुस्कान चाहिए,
एक हमसफ़र चाहिए,
और उसके हाथों की चाय चाहिए।

विकास शुक्ला
प्रवर श्रेणी लिपिक

घर का बड़ा बेटा

आसान नहीं होता घर का बड़ा बेटा होना, छोटी उम्र जब पिता का साया उठ जाया करता है
तब वो अपने आंसुओ को दबा लिया करता है।
छोटी सी उमर में ही परिवार की ज़िम्मेदारी उठा कर, बड़े बेटे होने का पद संभाल लिया करता है।
कड़कती धूप में एक शीतल सी छांव बन जाया करता है, कंधो पर अनेको जिम्मेदारियों का बोझ
सह लिया करता है।
अपने सपनों को अनदेखा कर, घर के हर व्यक्ति के सपनों की चिंता किया करता है
गालो पर नकली मुस्कुराहट के गड्ढों को संभाला करता है जिंदगी के गड्ढों में लड़खडाता गिरता और अकेले ही
खुद को संभाल लिया करता है।
पिता की छवि बन कर हर रिश्ते की डोर को सहेज कर रखता है खुद अपने हिस्से की हँसी खुशियों को त्याग कर
भी सबकी ख़ुशी और हँसी को देख खुश हुआ करता है।
घर का बड़ा बेटा वो दिया बनता है जो खुद को निरंतर जला कर पूरे घर को रोशनी से युक्त किया करता है।
घर का बड़ा बेटा नाम से बेटा, और जिम्मेदारियो से पिता बन जाता है।

जितेंद्र मीना
प्रवर श्रेणी लिपिक

प्रकृति के साथ जियें, ग्लोबल वार्मिंग के साथ नहीं

बरगद एक लगाइये, पीपल रोपें पाँच। घर घर नीम लगाइये, यही पुरातन साँच।।
यही पुरातन साँच,- आज सब मान रहे हैं। भाग जाय प्रदूषण सभी अब जान रहे हैं ।
विश्वताप मिट जाये होय हर जन मन गदगद। धरती पर त्रिदेव हैं- नीम पीपल और बरगद।।
आप को लगेगा अजीब बकवास है, किन्तु यह सत्य है.. .
पिछले 68 सालों में पीपल, बरगद और नीम के पेडों को सरकारी स्तर पर लगाना बन्द किया गया है,
पीपल कार्बन डाई ऑक्साइड का 100% एबजॉर्बर है, बरगद 80% और नीम 75 %
इसके बदले लोगो ने विदेशी यूकेलिप्टस को लगाना शुरू कर दिया, जो जमीन को जल विहीन कर देता है,
आज हर जगह यूकेलिप्टस, गुलमोहर और अन्य सजावटी पेड़ो ने ले ली है,
अब जब वायुमण्डल में रिफ्रेशर ही नही रहेगा तो गर्मी तो बढ़ेगी ही,
और जब गर्मी बढ़ेगी तो जल भाप बनकर उड़ेगा ही,
हर 500 मीटर की दूरी पर एक पीपल का पेड़ लगायें,
तो आने वाले कुछ साल भर बाद प्रदूषण मुक्त हिन्दुस्तान होगा...
वैसे आपको एक और जानकारी दे दी जाए...
पीपल के पत्ते का फलक अधिक और डंठल पतला होता है
जिसकी वजह शांत मौसम में भी पत्ते हिलते रहते हैं और स्वच्छ ऑक्सीजन देते रहते हैं।
वैसे भी पीपल को वृक्षों का राजा कहते है।
इसकी वंदना में एक श्लोक देखिए-मूलम् ब्रह्मा, त्वचा विष्णु, सखा शंकरमेवच।
पत्रे-पत्रेका सर्वदेवानाम, वृक्षराज नमस्तुते। अब करने योग्य कार्य....
इन जीवनदायी पेड़ों को ज्यादा से ज्यादा लगाने के लिए समाज में जागरूकता बढ़ायें...

मनीष मीना
बहुकार्य कर्मी

जय जय किसान

जिसके संस्कार और विचार गड़बड़ हैं,
वो पढ़-लिख कर भी अनपढ़ है
वो अनपढ़ भी होशियार है,
जिसके मेहनत से जीता संसार है

वो फसल उगाता है मेहनत से
वो फसल काटता मेहनत से
अहित उसका विचार नहीं
उद्देश्य ही परोपकार है।

ऐ किसान भाई तेरी दयालुता को मेरा शत्-शत्
नमस्कार है!

तुझ बिन जीवन में अंधियार है
तुझसे ही जीवन में उजियार है
तेरी उगाई फसलों से ही
चलता सारा संसार है

जो तुझे नहीं समझ सका, उनकी सोच पर धिक्कार है।

भूख लगी हमको फसल उगाया तुमने,
मन उदास हुआ तो, कजली गीत सुनाया तुमने ।

तुम्हारा हम पर एहसान है,
तू ही भारत की जान है,
है राष्ट्र का सम्मान तू ही,
ये भारत देश कृषि-प्रधान है ।

पंकज मीना
प्रवर श्रेणी लिपिक

माँ की ममता

माँ तुम कितनी सुंदर और कितनी महान हो
तेरी ममता का आँचल कितना निर्मल और प्यारा है।
कितना भार उठाकर भी तुम सही दिशा दिखलाती हो
भूल सभी मन के मैल एकता की सीख सिखाती हो।

बचपन की लोरी की तरंग अब भी कानो में गूंजती है
तुम ही उन मीठी मीठी सरगम के गीतों की माला हो।
हुआ अंधेरा जब जीवन में तब तुमने प्रकाश फैलाया है
चुन चुन कर मेरे जीवन में दीपों की माला को जलाया है।

शरारतों को मेरी तुम पल में भूल जाती हो
नाराजगी तेरी मन को बहुत लुभाती है।
अपनी खुशियों का त्याग कर प्रेम की वर्षा करती हो
जीवन के हर पथ पर तुम ये योगिता दिखलाती हो।

धन्य है मेरा जीवन जो तुझको पाया है
तेरा प्यार दुलार और आशीष जुटाया है।
पहला पाठ जीवन का तुमने ही पढ़ाया है
कठिनाइयों में राह ढूंढना तुमने ही सिखाया है।

तेरी ममता और प्रेम का न कोई मोल है
जीवन में दिए तेरे संस्कार ही अनमोल है।
मेरे दिल की आवाज़ को क्षण भर में सुन लेती हो
सभी ख्वाहिशों को मेरी एक पल में पूरा कर देती हो।
माँ तुम कितनी सुंदर और कितनी महान हो
तेरा हृदय कितना कोमल और विशाल है।
माँ तुम कितनी सुंदर और..

सोमोता राम मीना
अवर श्रेणी लिपिक

तीन दोस्तों की मजेदार स्टोरी

3 दोस्त एक ऊंची इमारत की 20 वीं मंजिल पर रहते थे।
एक दिन वे काम से घर लौटे तो लिफ्ट काम नहीं कर रही थी।
दोस्तों ने सीढ़ियों से ऊपर जाने का फैसला किया।

पहली 9 मंजिल तक एक दोस्त ने ऐक्शन फिल्म की स्टोरी सुनाई, और समय कट गया।

इसके बाद 9 मंजिल तक दूसरे दोस्त ने एक रोमांटिक फिल्म की स्टोरी सुनाई।

लेकिन, 19 वीं मंजिल पर पहुंचकर तीसरे दोस्त ने सिर्फ एक लाइन कही कि तीनों की आंख में आंसू आ गए।

उसने कहा, ''मैं घर का
चाबी नीचे कार में ही छोड़ आया हूं।''

(कहानी का तथ्य: हँसी सबसे अच्छी दवा है इसलिए हँसते रहें)

परिमल घोषाल
प्रवर श्रेणी लिपिक
राजस्व वसूली शाखा

किसी ने पूछा, क्या है नारी..?

मैंने कहा.. --------
घर का स्वाभिमान है **नारी**
ममता का अवतार है **नारी,**
आंगन की तुलसी है **नारी**
द्वार का अभिमान है **नारी,**
घर की शोभादारी है **नारी**
रिश्तों की संवाहक है **नारी,**
शीतलता का रूप है **नारी**

अग्नि की ज्वाला है **नारी,**
अबला नहीं सशक्त है **नारी**
हर घर की शोभा है **नारी,**
सागर सा गहरी है **नारी**
पर्वत सा ऊंचा है **नारी,**
आधा शिवशंकर है **नारी**
नारायण का रूप है **नारी,** --

रौशन कुमार
प्रवर श्रेणी लिपिक
राजस्व वसूली शाखा

गुर्दा (किडनी) रोग, कारण तथा बचाव

आजकल हर व्यक्ति स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्या से जूझ रहा है किसी को कैंसर है तो किसी को किडनी की बीमारी, ये सब जान लेवा हैं। सभी लोग जानते हैं कि इलाज़ से बेहतर रोकथाम है "prevention is better than cure" इसलिए यदि इन जैसी बीमारियों को रोकथाम के लिये कदम नहीं उठाये तो जान को खतरा रहता है। भारत में लगभग 10 प्रतिशत लोग किडनी की समस्याओं से जूझ रहे हैं। गलत खानपान, जीवन शैली, दिनचर्या तथा तनाव ग्रस्त जीवन भी इसका मुख्य कारण है।

अब हम गुर्दे (किडनी) के बारे में जान लेते हैं। गुर्दे मानव शरीर की आतंरिक संरचना का महत्वपूर्ण अंग हैं। ये संरचना में राजमा के दाने के आकार के होते हैं। ये रक्तवाहिनी शिराओं द्वारा लाये गए अशुद्ध रक्त को शुद्ध करते हैं, यही शुद्ध रक्त, रक्तवाहिनी धमनियों द्वारा शरीर के विभिन्न अंगों तक पंहुचता है। प्रत्येक गुर्दे में असंख्य छन्ने या वृक्काणु (नेफ्रोंस) होते हैं। यही वृक्काणु रक्त के पोषक तत्वों को सुरक्षित छोड़कर, रक्त में से अवांछित लवणों, यूरिया तथा अशुद्ध जल को छानकर विजातीय द्रव्य को युरेटर के द्वारा मूत्राशय में भेजते हैं। बचा हुआ शुद्ध रक्त जिसमें पोषक तत्व होते हैं रक्तवाहिनी धमनियों द्वारा शरीर के दूसरे भागों में भेज दिया जाता है।

गुर्दा रोग की शुरुआत कैसे होती है ये जानना बेहद जरूरी है। इसका सबसे मुख्य कारण है उच्च रक्तचाप। उच्च रक्तचाप के कारण गुर्दों में रक्त का दबाव बढ़ जाता है जिससे गुर्दों की धमनियां कठोर हो जाती हैं और गुर्दों का कार्य बढ़ जाता है जिससे वृक्काणुओं के रोग ग्रस्त होने या उनके निष्क्रिय होने की संभावनाएं बढ़ जाती हैं।

गुर्दा रोग का दूसरा मुख्य कारण है मधुमेह (शुगर)। मधुमेह होने से इन्सुलिन का स्राव कम या बंद हो जाता है तथा रक्त में शर्करा का स्तर बढ़ना शुरू हो जाता है। ज्योंहि शर्करा का स्तर मानक स्तर 140 mg/dl से अधिक हो जाता है तब गुर्दों को अपनी क्षमता को बढ़ाना पड़ता है, ज्यादा कार्य करने के कारण वे निष्क्रिय होने लगते हैं। गुर्दों की निष्क्रियता रक्त में यूरिया, कोलेस्ट्रोल तथा क्रेटीनिन की मात्रा बढ़ने का कारण बनती है जिससे गुर्दे को सबसे ज्यादा हानि पंहुचती है।

अधिक नमक का प्रयोग भी बहुत बड़ा कारण है क्योंकि अधिक नमक का सेवन उच्च रक्तचाप का सबसे बड़ा कारण है। नमक की शरीर को पोषण के लिए बहुत कम मात्रा कि जरुरत होती है। ज्यादा नमक और पानी जब शरीर में मिलते हैं तो रक्त में अम्लता बढती है जिसके फलस्वरूप यूरिक एसिड तथा पथरी बनने की संभावनाए बढ़ जाती हैं तथा गुर्दे की स्वाभाविक क्रिया में बाधा पंहुचने लगती है।

गुर्दे की बीमारी का अन्य महत्वपूर्ण कारण है दवाइयों का प्रयोग, कुछ लोग पेन किलर जैसी दवाइयों का प्रयोग बिना चिकित्सक (सेल्फ मेडिकेशन) की सलाह के ही ले लेते हैं जिसका गुर्दे पर नकारात्मक असर पड़ता है और गुर्दे के ख़राब होने का खतरा बढ़ जाता है। भोजन ग्रहण करने की अनियमितता, पानी कम पीना, अधिक वसा एवं शर्करा युक्त भोजन भी गुर्दे रोग का कारण हैं। शरीर को वांछित पोषक तत्व जैसे कैल्शियम, प्रोटीन आदि मूत्र विसर्जन में शरीर से बाहर निकल जाते हैं जिससे शरीर में हिमोग्लोबिन नहीं बढ़ता और गुर्दे सिकुड़ने लगते हैं।

अब सोचने वाली बात ये है कि इस रोग से बचने के लिए और वृक्कों का कार्य ठीक रखने के लिए हमें क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए – सबसे पहले उच्च रक्तचाप से बचना चाहिए। रक्तचाप मानक स्तर 80-120 mm Hg में रखने के लिए नमक का सेवन बिल्कुल कम रखना चाहिए, पूरे दिन में 2 से 3 ग्राम ही नमक का सेवन करना चाहिए, हो सके तो सेंधा नमक का इस्तेमाल कर सकते हैं। प्रोटीन युक्त भोजन करना चाहिए। एक दिन में कम से कम तीन लीटर पानी पीना चाहिए। पुड़ी परांठे, चिप्स नमकीन, फ़ास्ट फूड, चाय कॉफ़ी, बासी भोजन, मांस, ज्यादा मिर्च मसालेदार भोजन से बचना चाहिए। अपनी जीवन शैली तथा दिनचर्या में बदलाव लाना चाहिए। स्वास्थ्य ही धन है (Health is Wealth) रोज व्यायाम तथा प्राणायाम करना चाहिए।

लोगों में जागरूकता लाने के लिए हर साल मार्च के दूसरे गुरुवार को किडनी दिवस भी मनाया जाता है। गुर्दे (किडनी) हमारे शरीर का बहुत महत्वपूर्ण अंग हैं। किडनी को स्वस्थ रखने और बचाने के लिए हमें हर संभव प्रयास करने चाहिए।

हरीश चन्द्रा
बहु कार्य कर्मी

घर की मर्यादा- बेटी

पिता के अहंकार को, वो सिर से लगती है,
माँ की सीख लेके, वो नया घर बसाती है,
वो बेटी है, घर की मर्यादा कहलाती है।

कलम– स्याही से लेकर, वो घर भी चलाती है,
हो जरुरत या सिर्फ अपने लिए, वो ऑफिस भी जाती है,
वो बेटी है, घर की मर्यादा कहलाती है।

अधिकार कभी मांगती नहीं, सिर्फ फ़र्ज निभाती है,
अपने परिवार के लिए, वो निस्वार्थ भाव से करती जाती है,
वो बेटी है, घर की मर्यादा कहलाती है।

कहती नहीं कुछ, अधिकतर सुनती जाती है,
अपनों के लिए, वो अपनी इच्छाए दबाती है,
वो बेटी है, घर की मर्यादा कहलाती है।

सवाल नहीं किया उसने, केवल स्वीकारा है,
समाज की दी गई बेडियों को, गहना बना के खुद को सवारा है।

बदलते समाज को देख कर, वो भी बदलती जाती है,
प्रत्येक दिन वो खुद को बेहतर बनाती जा रही है।

वो शीतल है, वो कोमल है, दया, करुणा, आशा, ममता
से भरी मूरत है,
पर निडरता, द्रढ़ निश्चय, वीरता, मुखर व साहस जैसे गुणों
को भी दर्शाती है,
वो बेटी है, घर की मर्यादा कहलाती है।

रुढ़िवादी समाज को, अब वो नकारने लगी है,
खुद को अहमियत वो, अब पहचानने लगी है,
पर रख साथ संस्कारों की पोटली,
कभी माँ, कभी बेटी, कभी स्त्री का फ़र्ज निभाती है
क्योंकि उसे पता है,
वो बेटी है, घर की मर्यादा कहलाती है।

ममता चौधरी
(पुत्री श्रीमती मीना कुमारी)
बहुकार्य कर्मी

नशा एवं गति

वर्तमान के इस भागमभाग में समय की कमी हर किसी के जीवन का हिस्सा बन गई है। खानपान व दिनचर्या एवम् समय का सही प्रबंधन नहीं होने के कारण हर किसी को अपने कार्यस्थल या विद्यालय में अवसाद का सामना करना पड़ता है। जिनको विलासिता पूर्ण जीवन विरासत में मिलता है ऐसे लोग नशे के आवेश में न तो अपने जीवन का महत्त्व समझ पाते है न ही सड़क पर चल रहे लोगो का, तथा उनकी जिन्दगी की कीमत भी कीड़े मकोड़े जितनी ही समझते है एवं न्याय की देवी को भी अपने हाथो की कठपुतली ही समझते है। कम उम्र के इन नोजवानो को जिनकी जवानी परवान पर होती है इस विलासिता व आधुनिकता को आसानी से पचा नहीं पाते एवम् नशे का खुमार उनके सर चढ़कर बोलने लगता है जो की किसी दिन तेज रफ़्तार कार से लोगो को कुचलकर या अपने आप को नुकसान पहुँचाकर उतरता है। इस तरह के मानसिक रोगियों को परिवार वाले अति लाड दुलार का परिणाम बताते है तथा उनका इलाज नहीं करवाकर उनके विकारो को और अधिक पनपने देते है परिणाम स्वरूप ये मानसिक रोगी के रूप में स्वयं का तथा परिवार के साथ ही किसी और परिवार व समाज का संतुलन ख़राब करते है । चाहे यह पुणे पोर्से कार मामला हो या मुंबई बीएमडब्लू (BMW) कार या फिर किसी अभिनेता द्वारा नशे में डिवाइडर पर गाड़ी चढ़ाकर मजदूरो की निर्मम हत्या का मामला हो, ये सभी मामले अतिउन्माद व अधिक गति एवम नशे की वजह से अपना आपा खो बैठे, इन्ही समाजद्रोही मानसिक रोगियों के विकृत रवैये का नतीजा है।

डब्लूएचओ की रिपोर्ट के मुताबिक भारत में हर घंटे 34 लोगो की मौत सड़क दुर्घटना में होती है । जिनमे से लगभग तीन चौथाई दुर्घटनाओ का कारण तेज गति है तथा इसके फलस्वरूप हुई मौतों में दो तिहाई का कारण नशा है। उत्पादकता एवम् आय पर भी इसका विपरीत असर पड़ता है। सकल घरेलु उत्पाद का लगभग पांच प्रतिशत इन सड़क दुर्घटनाओ की अनुमानित लागत है। यह सार्वजनिक व निजी क्षेत्रो तथा पीड़ितो व उनके परिवारों पर भारी बोझ डालते है।

वाहन चलाते समय अपनी सुरक्षा का ध्यान रखे तथा सड़क पर चल रहे दुसरे लोगो की सुरक्षा का भी क्योकि आपके तथा उनके घर पर परिवार वाले इंतजार कर रहे है।

राकेश कुमार सैनी
बहुकार्य कर्मी (वित्त शाखा)

राजभाषा ज्ञान प्रतियोगिता परिणाम (18.09.2024)

हिंदी भाषी वर्ग

क्र. सं.	प्रतियोगी श्री/श्रीमती/सुश्री/कुमारी	स्थान	पुरस्कार (रु.)
1.	पंखी लाल मीना, प्रवर श्रेणी लिपिक	प्रथम	रु.1800/-
2.	सुरेन्द्र कुमार, सहायक	द्वितीय	रु.1500/-
3.	राकेश कुमार सैनी, बहुकार्य कर्मी	तृतीय	रु.1200/-
4.	सरजीत जाखड, सहायक	प्रोत्साहन	रु.500/-
5.	मनकेश मीना, सहायक	प्रोत्साहन	रु.500/-

हिंदीतर भाषी वर्ग

क्र. सं.	प्रतियोगी श्री/श्रीमती/सुश्री/कुमारी	स्थान	पुरस्कार (रु.)
1.	परिमल घोषाल, प्रवर श्रेणी लिपिक	प्रथम	रु.1800/-
2.	वी रामास्वामी नायक, प्रवर श्रेणी लिपिक	द्वितीय	रु.1500/-
3.	विस्लावत बालू, बहुकार्य कर्मी	तृतीय	रु.1200/-

हिंदी टिप्पण एवं आलेखन प्रतियोगिता परिणाम (20.09.2024)

हिंदी भाषी वर्ग

क्र. सं.	प्रतियोगी श्री/श्रीमती/सुश्री/कुमारी	स्थान	पुरस्कार (रु.)
1.	कुमार कुंजन, सहायक निदेशक	प्रथम	रु.1800/-
2.	पंखी लाल मीना, प्रवर श्रेणी लिपिक	द्वितीय	रु.1500/-
3.	सुरेन्द्र कुमार, सहायक	तृतीय	रु.1200/-
4.	हिरेन नाग्रेचा, सहायक	प्रोत्साहन	रु.500/-
5.	सरजीत जाखड़, सहायक	प्रोत्साहन	रु.500/-

हिंदीतर भाषी वर्ग

क्र. सं.	प्रतियोगी श्री/श्रीमती/सुश्री/कुमारी	स्थान	पुरस्कार (रु.)
1.	सुनीत सुदर्शन, सहायक	प्रथम	रु.1800/-
2.	परिमल घोषाल, प्रवर श्रेणी लिपिक	द्वितीय	रु.1500/-
3.	विस्लावत बालू, बहुकार्य कर्मी	तृतीय	रु.1200/-
4.	वी. रामास्वामी नायक, प्रवर श्रेणी लिपिक	प्रोत्साहन	रु.500/-

हिंदी वाक् प्रतियोगिता परिणाम (24.09.2024)

हिंदी भाषी वर्ग

क्र. सं.	प्रतियोगी श्री/श्रीमती/सुश्री/कुमारी	स्थान	पुरस्कार (रु.)
1.	विनीता कुमारी, प्रवर श्रेणी लिपिक	प्रथम	रु.1800/-
2.	चन्द्र प्रकाश मीना, प्रवर श्रेणी लिपिक	द्वितीय	रु.1500/-
3.	राकेश कुमार सैनी, बहुकार्य कर्मी	तृतीय	रु.1200/-
4.	आनंद कुमार, सहायक	प्रोत्साहन	रु.500/-
5.	हरेश खोड़ाभाई अहीर, प्रवर श्रेणी लिपिक	प्रोत्साहन	रु.500/-

हिंदीतर भाषी वर्ग

क्र. सं.	प्रतियोगी श्री/श्रीमती/सुश्री/कुमारी	स्थान	पुरस्कार (रु.)
1.	परिमल घोषाल, प्रवर श्रेणी लिपिक	प्रथम	रु.1800/-
2.	विस्लावत बालू, बहुकार्य कर्मी	द्वितीय	रु.1500/-

हिंदी निबंध प्रतियोगिता परिणाम (25.09.2024)

हिंदी भाषी वर्ग

क्र. सं.	प्रतियोगी श्री/श्रीमती/सुश्री/कुमारी	स्थान	पुरस्कार (रु.)
1.	रिंकु कुमार मीणा, प्रवर श्रेणी लिपिक	प्रथम	रु.1800/-
2.	चन्द्र प्रकाश मीना, प्रवर श्रेणी लिपिक	द्वितीय	रु.1500/-
3.	आनंद कुमार, सहायक	तृतीय	रु.1200/-
4.	पूजा उपाध्याय, बहुकार्य कर्मी	प्रोत्साहन	रु.500/-
5.	हिरेन नाग्रेचा, सहायक	प्रोत्साहन	रु.500/-

हिंदीतर भाषी वर्ग

क्र. सं.	प्रतियोगी श्री/श्रीमती/सुश्री/कुमारी	स्थान	पुरस्कार (रु.)
1.	परिमल घोषाल, प्रवर श्रेणी लिपिक	प्रथम	रु.1800/-
2.	विस्लावत बालू, बहुकार्य कर्मी	द्वितीय	रु.1500/-
3.	वी रामास्वामी नायक, प्रवर श्रेणी लिपिक	तृतीय	रु.1200/-

पत्र संख्याः हिं.शि.यो./विविध/11/2024-25/236

भारत सरकार

Government of India

गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग

Ministry of Home Affairs, Department of Official Language

सर्वकार्यभारी अधिकारी का कार्यालय

OFFICE OF THE OFFICER IN OVER ALL CHARGE

भाषा गहन प्रशिक्षण केंद्र/LANGUAGE INTENSIVE TRAINING CENTER

सेवा में,

उप निदेशक व प्रभारी राजभाषा,
कर्मचारी राज्य बीमा निगम, उप क्षेत्रीय कार्यालय
पंचदीप भवन, उर्मी सोसायटी, अलकापुरी, वड़ोदरा 390 007

विषयः 'राजभाषा विश्वामित्री' पत्रिका के प्रथम अंक की सहर्ष प्राप्ति।

सम्मानित महोदय,

उपर्युक्त विषय में सहर्ष सूचित करना है कि 'राजभाषा विश्वामित्री' पत्रिका के प्रथम अंक की सहर्ष प्राप्ति हुई, इस हेतु आभार। संघ की राजभाषा नीति के क्रियान्वयन की दिशा में कर्मचारी राज्य बीमा निगम, उप क्षेत्रीय कार्यालय, वडोदरा द्वारा 'राजभाषा विश्वामित्री' पत्रिका के प्रथम अंक का प्रकाशन कर एक महत्वपूर्ण कार्य संपादित किया गया है।

पत्रिका का प्रथम अंक आकर्षक, जानकारी से समृद्ध, आषागत विशेषताओं युक्त, पाठकवृन्द को बांधे रखने वाला एक संग्रहणीय व समय अंक है। प्रथम अंक की बेजोड़ प्रस्तुती संपादक महोदय व उनकी संपूर्ण टीम के जान कौशल के साथ-साथ अथाह समर्पण व परिश्रम को अभिव्यक्त करता है। इस सराहनीय कार्य से वड़ोदरा ही नहीं अपितु अन्यत्र स्थित संघ सरकार से जुड़े कार्यालयों व कार्मिकों को प्रेरणा मिलेगी, ऐसा मेरा विश्वास है।

अंक सज्ञा विषयगत, उद्देश्यानुकुल एवं आकर्षक रही जो पत्रिका के प्रति पाठक की जिज्ञासा को अनवरत जागृत करती है। भारतीय भाषाओं के संसर्ग से निरंतर समृद्ध हो रही हिंदी भाषा के विराट स्वरूप को प्रचारित-प्रसारित करने के साथ-साथ इसे विश्व भाषा के रूप में प्रथम सोपान पर पहुँचाने का 'उद्घोष' इस अंक में समाहित विविध लेखों के माध्यम से एक व्यवस्थित, सटीक व सक्षम कार्य प्रणाली के माध्यम से पाठक वृन्द के हृदय कमल में किया गया है।

पत्रिका में समाहित संदेश, संरक्षक तथा संपादक की कलम से राजभाषा हिंदी के विषद रूप को सहज व संक्षिप्त अभिव्यक्ति प्रदान कर पाठकवृन्द को राजभाषा के सचे सेवक बनाने की प्रेरणा बड़े ही सरल व प्रभावी अंदाज में अभिव्यक्त हुई है। विभिन्न आलेखों में दश, समाज तथा वैश्विक परिदृश्य पर मनन-गंथन-मंतव्य के साथ-साथ हिंदी के विविध स्वरूपों यथाः राष्ट्रभाषा, राजभाषा, मातृभाषा, जनभाषा, लौकिक भाषा आदि पर ऐतिहासिक, व्यवहारिक तथ्यों का विवेचन कर एक सार्थक विज़न पाठकवृन्द को दिया है जिसमें सारथि बजकर हर भाषा प्रेमी अपना योगदान देकर भूतकाल की भाषाई भूलों को दूर कर भविष्य का स्वर्णिम राष्ट्र निर्माण कर सकते हैं। आलेखों में लेखकगण अपनी बात बड़ी ईमानदारी व सटीकता से सरस व सहज भाषा में रखते प्रतीत हो रहे हैं जो पाठकगण के हृदय को निश्चित रूप से स्पंदित करती है।

पत्रिका में भाषाई नवाचार का समावेश इसे वर्तमान काल की जरूरतों के अनुरूपता दे रहा है। यह एक संग्रहणीय अंक है, इस हेतु संपूर्ण संपादक मंडल की बेजोड़ मेहनत हेतु पुनः आकाशभर शुभकामनाएं।

सहायक निदेशक / Assistant Director
राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार
Dept. of O.L., M/o Home Affairs, Govt. of India
गहन भाषा प्रशिक्षण उपकेंद्र, पी. एन्ड टी. कालोनी
Intensive Language Trg Sub-Centre, P & T Colony
हरणी, वडोदरा / Harni, Vadodara-390 022

भवदीय,

(डॉ. दिनेश सिंह)
भाष प्रशिक्षण केंद्र, वड़ोदरा

डाक महाध्यक्ष का कार्यालय (दक्षिण गुजरात क्षेत्र), डाक भवन, प्रतापगंज, वड़ोदरा- 390002

''हिंद वाणि के बल से फिर सागर मंथन हो सकता।
भारत भूमि के कण-कण को अमृत का गागर मिल सकता।।''

કર્મચારી રાજ્ય વીમા નિગમ
(શ્રમ અને રોજગાર મંત્રાલય, ભારત સરકાર)
कर्मचारी राज्य बीमा निगम
(श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार)
EMPLOYEES' STATE INSURANCE CORPORATION
(Ministry of Labour & Employment, Govt. of India)

પેટા પ્રાદેશિક કચેરી / उप क्षेत्रीय कार्यालय / Sub Regional Office
બીજો માળ, "સમર્થ હાઉસ", જૈનમ રેસીડેન્સી અને સમર્થ પેરેડાઇઝની પાસે,
સમર્થ સર્કલ, ન્યુ પાલ લેક રોડ, પાલ, સુરત, ગુજરાત - 394510
द्वितीय तल, "समर्थ हाउस", जैनम रेसिडेंसी व समर्थ पैरेडाईस के पास,
समर्थ सर्कल, न्यु पाल लेक रोड, पाल, सूरत, गुजरात - 394510
2nd Floor, "Samarth House", Near Jainam Residency and Samarth Paradise,
Samarth Circle, New Pal Lake Road, Pal, Surat, Gujarat - 394510
Phone No. (0261)-2730124/5/6/7/8/9 E-mail : dir-surat@esic.nic.in
Website : www.esic.nic.in / www.esic.in

सं.: 39-ए-49/34/01/2020-रा.भा.
दिनांक : 16.05.2024

प्रशंसा पत्र

सेवा में,
उप निदेशक व कार्यालय प्रभारी,
उप क्षेत्रीय कार्यालय,
कर्मचारी राज्य बीमा निगम,
पंचदीप भवन, उर्मी सोसायटी, अलकापुरी,
वड़ोदरा (गुजरात)।

विषय : हिन्दी गृहपत्रिका 'राजभाषा विश्वामित्री' के प्रथम अंक की प्राप्ति सूचना ।

महोदय,

आपके कार्यालय की हिन्दी गृहपत्रिका 'राजभाषा विश्वामित्री' के प्रथम अंक, वर्ष 2023- 24 की प्राप्ति हुई । हार्दिक धन्यवाद ।

पत्रिका का मुख-पृष्ठ एवं आंतरिक कलेवर सादगीपूर्ण है। 'बोधिसत्व', 'चिड़ियां दा चंबा', 'संकुचित होती परिवार की अवधारणा', 'चार लोग' एवं 'राजभाषा हिन्दी चुनौतियाँ एवं समाधान' आदि स्तरीय रचनाओं सहित राजभाषा नीति संबंधी नियमों व अधिनियमों की जानकारी ने पत्रिका को उत्कृष्टता प्रदान की है। कार्यालय की विभिन्न गतिविधियों की झलक आकर्षक है।

आगामी अंक के लिए शुभकामनाओं सहित..

भवदीय
Signed by
Deepak Malik
Date: 16-05-2024 12:46:58
दीपक मलिक
उप निदेशक प्रभारी
उप क्षेत्रीय कार्यालय, सूरत

स्वच्छता पखवाड़ा-2023 के दौरान उप क्षेत्रीय कार्यालय में
उपस्थित अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण

उप क्षेत्रीय कार्यालय, वड़ोदरा का क्षेत्राधिकार

- उप क्षेत्रीय कार्यालय, वड़ोदरा
- शाखा कार्यालय
- औषधालय सह शाखा कार्यालय
- प्रस्तावित शाखा कार्यालय
- प्रस्तावित औषधालय सह शाखा कार्यालय
- कार्यान्वित क्षेत्र
- गैर कार्यान्वित क्षेत्र
- आंशिक रुप से कार्यान्वित क्षेत्र

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
Employees' State Insurance Corporation

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
(श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार)
उप क्षेत्रीय कार्यालय
उर्मी सोसाइटी, अलकापुरी, वड़ोदरा 390007 (गुजरात)
फोन: 0265-2961442 । वीओआईपी: 20265006
ईमेल: dir-vadodara@esic.gov.in । वेबसाइट: www.esic.gov.in